चकमक

सितम्बर 2005

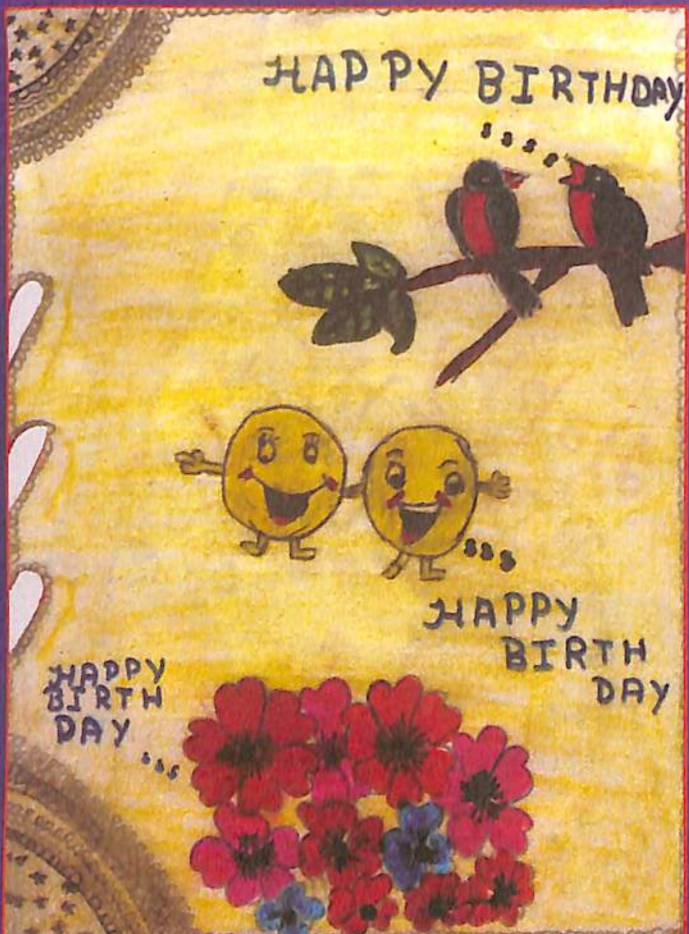
बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00





दिवाकर शर्मा, आठवीं, हरनगाँव, देवास, म.प्र.



गर्विता सहगल, सातवीं, बीकानेर, राजस्थान



अनन्या मिश्रा, दूसरी, फैज़ाबाद, उ.प्र.





एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष - 21. अंक - 2, सितम्बर 2005

क्या-क्या है इस अंक में

कहानी

विशेष लेख

चकमक पोस्टर

कविताएँ

तुम भी बनाओ

हर बार की तरह

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

अ
प
नी
बा
त



चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 21, अंक-2, सितम्बर 2005

सम्पादन	वितरण
विनोद रायना	कमल सिंह
अंजलि नरोना	अनिल लोखण्डे
स्वयं प्रकाश	मनोज निगम
सुशील शुक्ल	**सहयोग**
संगीता गुंदेचा	इन्दु नायर
विज्ञान परामर्श	**सज्जा**
सुशील जोशी	राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/एचआईजी-453,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन - 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

दोस्तो,

वादे के मुताबिक सितम्बर का अंक अगस्त के आखिरी हफ़्ते में तुम्हारे हाथों में है। उम्मीद है यह क्रम बना रहेगा। सितम्बर में शिक्षक दिवस आता है। इस अवसर पर हम अब्राहम लिंकन का लिखा वह पत्र दे रहे हैं जो उन्होंने अपने बेटे के अध्यापक को लिखा था। साथ ही पुस्तक अंश कॉलम में **तोत्तो-चान** नाम की किताब का एक अंश दे रहे हैं। इस पुस्तक में एक ऐसे स्कूल की कहानी है जो बेकार पड़े ट्रेन के डिब्बों में लगा करता था। जहाँ बच्चे बन्द कमरे में सिर्फ किताबी पढ़ाई नहीं करते थे। वे अपने शिक्षक के साथ घूमने जाते थे। खेलते थे। हँसी-ठट्ठा, गपशप करते थे। सैकड़ों गतिविधियाँ करते थे। अपनी मर्ज़ी से। दिल लगाकर।

इस किताब की लेखिका तेत्सुको हैं। वे इसी स्कूल *तोमोए* में पढ़ी हैं। कोबायाशी, तेत्सुको के शिक्षक हुआ करते थे। इस किताब में उनके कई किस्से हैं। कोबायाशी बच्चों से ऐसे पेश आते थे कि बच्चे बस उनके होकर रह जाते। हाँ, तेत्सुको इस स्कूल *तोमोए* में तब भरती हुई थी जब एक स्कूल से उसे यह कहकर निकाल दिया कि वो बेहद शरारती है। इतनी ऊधमी कही जाने वाली तेत्सुको से पहली मुलाकात के बाद कोबायाशी बोले *तुम सच में एक अच्छी बच्ची हो*।

वैसे तुम्हें क्या लगता है शिक्षक कैसा होना चाहिए? तुम अपने शिक्षकों के बारे में क्या सोचते हो? क्या तुम अपने किसी शिक्षक से मन की बात कह पाते हो?

इसी सितम्बर में *विश्व साक्षरता दिवस* आता है। इस दिन पूरी दुनिया एक बार अपने उस वादे को याद करती है जिसके अनुसार हर व्यक्ति साक्षर होना चाहिए। साक्षर होना यानी लिखना-पढ़ना आना। हालाँकि साक्षर होने का मतलब *दस्तखत करना आना* ही हो गया लगता है। अगर सबको शिक्षा मिल पाए तो साक्षरता दिवस मनाने की ज़रूरत ही क्यों पड़े। लेकिन आज भी हमारे आसपास कितने ही लोग हैं, बच्चे हैं जो चाहकर भी पढ़ नहीं पा रहे हैं। क्या गाँव, क्या शहर हर जगह बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। कई बच्चों को घर चलाने के लिए काम करना पड़ता है। कई बार स्कूल का माहौल उन्हें स्कूल छोड़ देने के लिए मजबूर कर देता है। *तोमोए* जैसे अच्छे स्कूलों और कोबायाशी जैसे शिक्षकों का न होना भी इसका एक प्रमुख कारण हैं।

ओणम भी तो इसी महीने आता है। केरल में यह उत्सव पूरे दस दिन चलता है। खूब खेल खेले जाते हैं। नावों की दौड़ होती है। लोग अपने घरों के बाहर फूलों की रंगोलियाँ बनाते हैं। हर तरफ झूले डल जाते हैं। उत्तर भारत में भी तो सावन के महीने में झूले पड़ते हैं।

तुम्हारे यहाँ झूले पड़ते हैं? तुम झूलने जाते हो? क्या तुम अपने कस्बे, गाँव या शहर के झूलों के चित्र बना सकते हो? अगर बना सको तो हमें भेजना। चुनिंदा चित्र चकमक के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।

तुम्हारा

सुशील

बाढ़ क्यों आती है?

सुकल्याण चक्रवर्ती



पिछले अंक में हमने पानी बचाने की बात की थी। इस अंक में हमें पानी से बचने की बात करनी पड़ रही है। तुमने अखबारों में पढ़ा होगा कि पिछले दिनों देश के विभिन्न भागों में भयंकर बाढ़ आई जिससे हज़ारों लोग बेघरबार हो गए और करोड़ों रुपए की सम्पत्ति नष्ट हो गई।

पिछले दिनों मध्यप्रदेश के कुछ इलाक़ों में जमकर वर्षा हुई जिससे लाखों मकान बह गए और हज़ारों पशु मर गए। कई गाँवों का तो कोई निशान ही नहीं बचा। आज भी सतना-रीवा पन्ना के कई इलाक़ों में जीवन सामान्य नहीं हो पाया है।

इसके बाद मुंबई में एक ही दिन में सौ सेण्टीमीटर के लगभग पानी बरस जाने से जनजीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया। सड़कें-कारें-बसें-बस्तियाँ पानी में डूब गईं। रेल सेवा, बस सेवा, हवाई यात्रा सेवा बन्द हो गईं। बिजली और टेलीफोन भी खराब हो गए। अनेक लोग चालीस-चालीस घण्टों तक घर नहीं पहुँच पाए और बड़ी संख्या में जानवर भी मारे गए।

इसके साथ ही भारी वर्षा के कारण महाराष्ट्र के अनेक ज़िलों में भी बाढ़ आ गई और कुछ बाँधों से पानी छोड़े जाने के कारण नदियों में उफान आ गया और कई गाँव खाली करवाने पड़े।

सवाल यह है कि बाढ़ क्यों आती है? और क्या इसे रोका जा सकता है?

बाढ़ क्यों आती है?

बाढ़ आने के कुछ कारण तो प्राकृतिक हैं और कुछ मानव निर्मित। प्राकृतिक कारणों में तो शायद हम अधिक कुछ न कर पाएँ लेकिन मनुष्य निर्मित कारणों के बारे में ज़रूर कुछ किया जा सकता है। आओ देखें कि ये कारण क्या हैं?

प्राकृतिक कारण

बाढ़ आने का पहला कारण है अचानक बहुत सारी बारिश हो जाना। पानी बहाने की हर नदी की एक क्षमता होती है। यदि इससे अधिक पानी अचानक उसमें आ जाएगा तो वह किनारे तोड़कर आसपास के क्षेत्र में फैल जाएगा। यही बाढ़ है।

नदियों के तीन हिस्से होते हैं। नदियाँ जब पहाड़ों से निकलती हैं तो उनकी धार पतली, पानी की मात्रा कम और बहाव तेज़ होता है। नदी के बीच का हिस्सा अपेक्षाकृत समतल और मैदानी होता है। यहाँ उनका पाट चौड़ा होता है, बहाव कुछ कम तेज़ होता है और आसपास के नदी-नाले उनमें आ मिलते हैं जिससे उनकी जलग्रहण क्षमता भी बढ़ जाती है।

अपने अन्तिम हिस्से में नदियों का पाट और चौड़ा तथा बहाव और धीमा हो जाता है।

पहाड़ों से उतरती तेज़ नदी अपने साथ मिट्टी-पत्थर भी काटती हुई लाती है। ये नदी के अन्तिम भाग तक आते हैं और काफी कुछ तले में बैठ जाते हैं। इससे नदी के अन्तिम भाग का तल ऊँचा हो जाता है।

अब यदि पहाड़ों से उतरकर बहुत सारा पानी अचानक नदी में आ जाएगा तो वह शान्ति से बह नहीं पाएगा और किनारे तोड़कर आसपास के इलाक़े में फैल जाएगा। कई बार तो यह पानी बीसियों किलोमीटर तक फैल जाता है और फिर लौट नहीं पाता है।

तूफान, बवंडर सुनामी आदि

समुद्र की सतह के नीचे होने वाले भूगर्भीय परिवर्तन भी कभी-कभी अचानक भारी वर्षा और बाढ़ का कारण बन जाते हैं। पिछले ही साल हमने देखा कि सुनामी के कहर ने भारत सहित अनेक एशियाई देशों के समुद्रतटीय जीवन को तहस-नहस कर दिया।

बाढ़ के मनुष्य निर्मित कारण

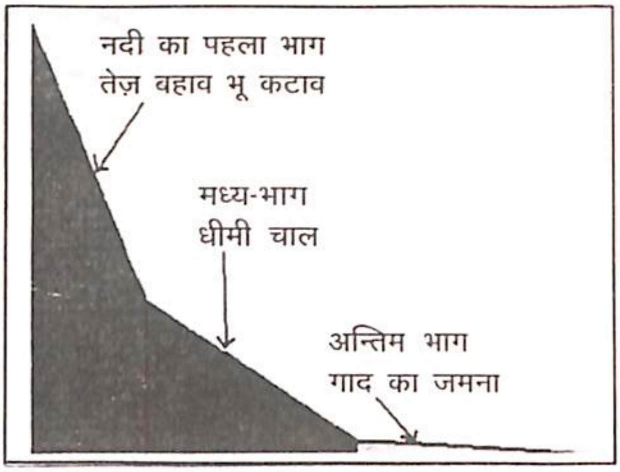
बाढ़ आने के अनेक कारण मनुष्य के ही बनाए हुए हैं और इसलिए यदि मिलकर कोशिश की जाए तो इन पर काबू भी पाया जा सकता है। आओ देखें कि ये कारण क्या हैं?

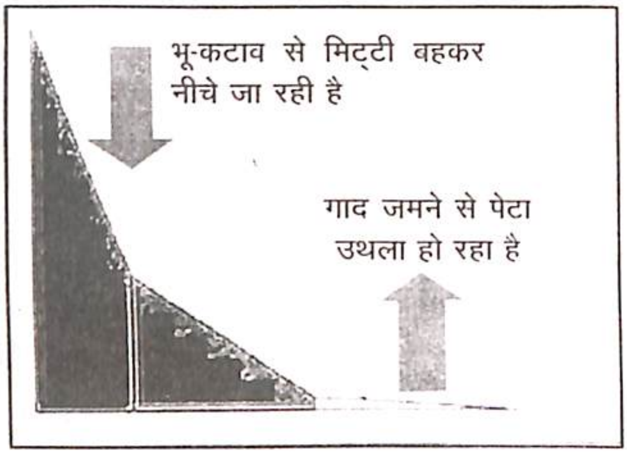
जंगलों का कटना

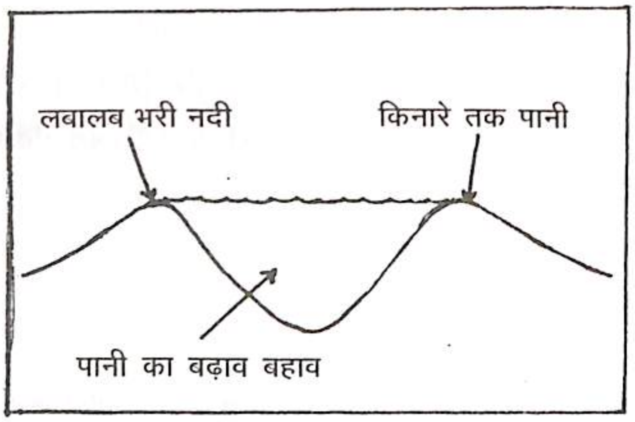
बाढ़ के मनुष्य निर्मित कारणों में प्रमुख है पहाड़ों पर तेज़ी से जंगलों का कटना। तुम जानते होगे कि पेड़ों की जड़ें मिट्टी को पकड़े रखती हैं और उसे पानी के साथ नदी में नहीं जाने देतीं। जब ये पेड़ काट दिए जाते हैं तो मिट्टी को रोकने वाला कोई नहीं बचता और वह पानी के साथ नदी में आ जाती है। इससे नदी के निचले भाग का पेटा उथला हो जाता है और उसकी जलग्रहण क्षमता कम हो जाती है।

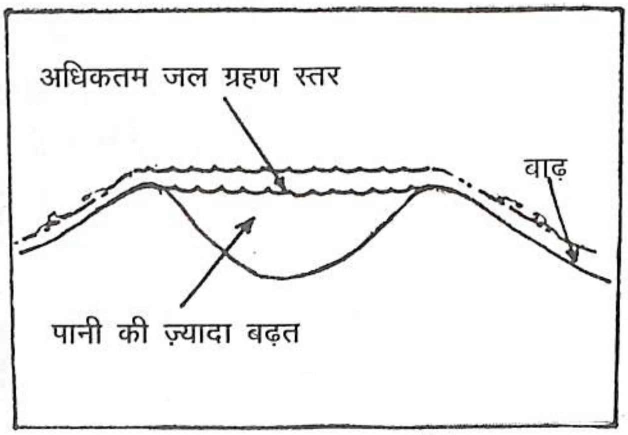
मिट्टी का तर हो जाना

इसका एक असर यह भी होता है कि पहाड़ों की मिट्टी इस हद तक तर हो जाती है कि वह इससे अधिक पानी सोख नहीं पाती और इस कारण भी जब पहाड़ों पर भारी वर्षा होती है तो नदियों में अधिक पानी आता है। जो अंततः बाढ़ बनकर फैल जाता है।









नदियों में कचरा डालना

मनुष्य द्वारा निर्मित बाढ़ का दूसरा कारण है नदियों में कचरा डालना। हमारे अनेक बड़े नगर नदियों के किनारे बसे हुए हैं। वहाँ कारख़ाने भी हैं जिनसे निकलने वाला औद्योगिक कचरा नदियों में डाला जाता है। घरेलू कचरा, पॉलीथिन, अधजले मुरदे, भस्मी, फूल, मलमूत्र आदि भी नदियों में डाला जाता है। इस सबसे धीरे-धीरे नदियों में काफी गाद जमा हो जाता है, नदियाँ उथली हो जाती हैं और थोड़ी-सी तेज़ बारिश से ही उनका पानी तटबंध छोड़कर बाहर फैल जाता है।

शहरों के नालों का भरना



शहरों में नालों की नियमित सफाई नहीं होती और लोग उनमें कूड़ा-कचरा फेंकते चले जाते हैं। नतीजा यह होता है कि जब बारिश आती है तो पानी नालों में बह नहीं पाता और सड़कों पर, निचली बस्तियों में और आवासीय क्षेत्रों में फैलकर बाढ़ जैसी स्थिति पैदा कर देता है।

शहरों की बसावट भी कई बार उतनी सुनियोजित नहीं होती जितनी होना चाहिए। कई बार नदी-नालों-तालाबों की ज़मीन को पाटकर उन पर कॉलोनियाँ बना ली जाती हैं और नदी के भराव क्षेत्र में भी लोग मकान बनाकर रहने लगते हैं।

यदि शहरों की कचरा निकासी और नाले-नालियों की व्यवस्था ठीक हो तो वहाँ बाढ़ आने का कोई कारण ही नहीं है।

अन्य कारण

बड़े बाँधों से भी बाढ़ के खतरे बढ़े हैं। अब सारी दुनिया में इस प्रश्न पर फिर से विचार किया जा रहा है कि नदियों पर बड़े-बड़े बाँध बनाए जाने चाहिए या नहीं।

बाढ़ से बचने का क्या कोई उपाय है?

जिन चीज़ों के लिए मनुष्य ज़िम्मेदार है, उन्हें तो ठीक किया ही जा सकता है। मसलन खूब पेड़ लगाए जाएँ, जंगलों को सुरक्षित रखा जाए, कूड़ा-कचरा नदी-नालों में न डाला जाए और कारख़ानों को भी अपना कचरा नदी में न डालने दिया जाए। लेकिन इसके अलावा एक उपाय और हो सकता है।

नदियों के आसपास के एक बहुत बड़े क्षेत्र के तालाब, पोखर, झील, जलाशय बाढ़ों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ये वर्षा के जल को सीधे बहकर नदी में नहीं जाने देते, बल्कि थोड़ा पानी अपने में रोक लेते हैं। यह पानी धीरे-धीरे ज़मीन के भीतर उतरता है जिससे आसपास के पूरे क्षेत्र में कुओं का जलस्तर भी बना रहता है।

लेकिन इन तालाबों-पोखरों-जलाशयों की कभी सफाई नहीं होती। कइयों को तो कूड़े से पाट दिया जाता है। यदि इन जलाशयों की ठीक देखभाल हो तो इनके क्षेत्र में बाढ़ के ख़तरे को काफी हद तक टाला जा सकता है। साथ ही यहाँ पीने का पानी भी पूरे साल सुलभ हो सकता है।

तो नतीजा क्या निकला? यही कि 'जल देवता' की पूजा करना और नदी को मैया कहना ही काफी नहीं है। उन्हें साफ सुथरा रखना भी हमारी ज़िम्मेदारी है।

आगे गड्ढा है

- गोविन्द शर्मा

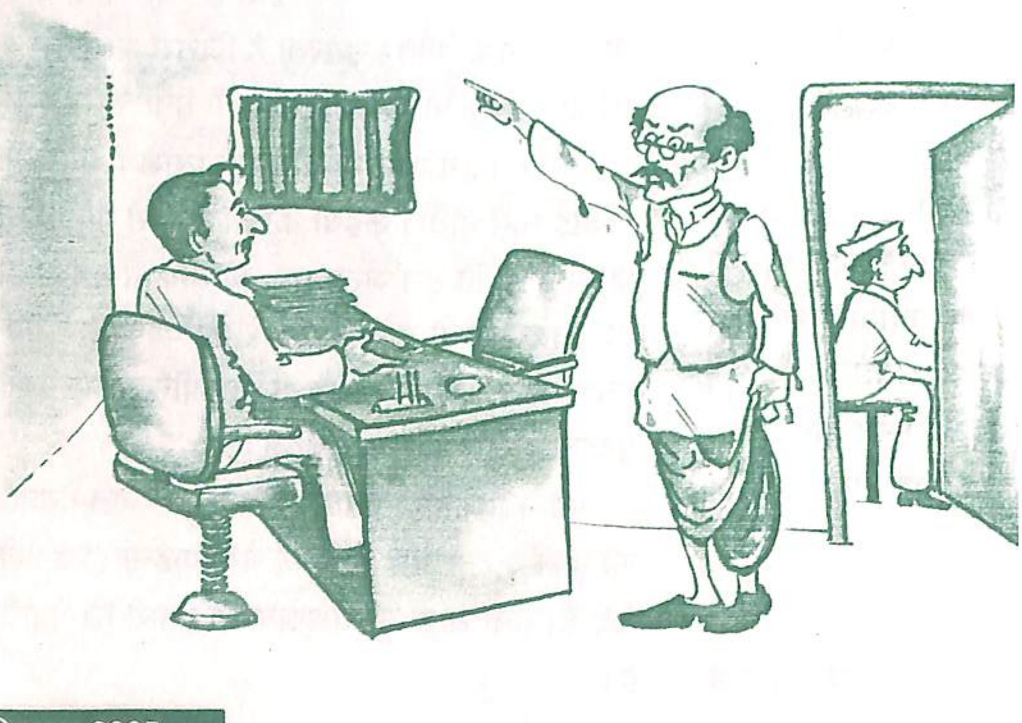


हमारे धर जी घूमने के शौकीन हैं। वर्षा हो या आँधी, वे घूमने ज़रूर जाते हैं। उस दिन बरसात हो चुकी थी। सड़क पर कहीं-कहीं पानी जमा था। उन्होंने इसकी परवाह नहीं की और घूमने निकल पड़े। सड़क पर जहाँ पानी जमा होता, वे उसके बीच में से ही निकल जाते। एक बार इसी तरह वे सड़क पर जमा पानी में से गुज़र रहे थे कि धड़ाम से गिर पड़े। उन्होंने समझा सड़क पर यह थोड़ा-सा पानी जमा है। पर वहाँ गहरा गड्ढा था।

किसी तरह गड्ढे से बाहर निकले और उसी तरह तरबतर नगर पालिका के अधिकारी के सामने जाकर खड़े हो गए। बोले, "आप सड़क पर बने गड्ढों की मरम्मत क्यों नहीं करवाते? देखिए, मैं एक गड्ढे में गिर पड़ा था।"

"धर जी, सड़क की मरम्मत तो हम भी करवाना चाहते हैं। पर यह काम बरसात का मौसम बीतने के बाद होगा।"

"ऐसा है तो आप लोगों को सावधान करने के लिए वहाँ पर बोर्ड क्यों नहीं लगा देते?"



"धर जी, हम यह भी आज़मा चुके हैं। लोग सड़क के किनारे लगे बोर्डों की परवाह नहीं करते हैं। फिर भी, आप कहते हैं तो हम गड्ढों से सावधान करने के लिए एक नहीं, कई बोर्ड लगवा देंगे।"

कुछ दिन बाद धर जी एक सड़क पर घूमने निकले। उन्होंने देखा, बोर्ड लगा है -

सावधान! आगे गड्ढा है।

धर जी ने अपनी धोती ऊँची की और सड़क पर जमा पानी में से सावधानी से जाने लगे। उन्होंने पूरा पानी पार कर लिया। कोई गड्ढा नहीं आया।

कुछ देर बाद उन्हें फिर एक बोर्ड नज़र आया। उस पर भी यही लिखा था - **आगे गड्ढा है।** धर जी फिर सावधानी से पानी को पार करने लगे। वास्तव में कोई गड्ढा नहीं आया। एक-एक कर पाँच बोर्ड धर जी पार कर चुके थे। सड़क पर पानी तो जमा था, पर कोई गड्ढा नहीं था।

उनको गुस्सा आ गया। नगर पालिका के अधिकारी ने मेरे साथ मज़ाक किया है। अचानक उन्हें छठा बोर्ड नज़र आया। उन्होंने मन ही मन कहा - 'नहीं पढूँगा इसे। यह मेरे साथ मज़ाक है।' उन्होंने अपनी आँखें ज़ोर से बंद कर लीं और सड़क पर जमा पानी को पार करने लगे। वे अभी दो कदम ही चले थे कि धड़ाम से एक गड्ढे में गिर पड़े। सारे भीग गए। किसी तरह गड्ढे से बाहर निकले। मुँह पर लगे पानी व कीचड़ के छींटे साफ किए और वहाँ लगे बोर्ड को पढ़ा - 'यही वह गड्ढा है, जिससे सावधान करने के लिए अब से पहले पाँच बोर्ड लगाए गए हैं। ●



चित्र- विवेक वर्मा

लड़का सचमुच गन्दा है

बेहद दन्दा फन्दा है
लड़का सचमुच गन्दा है
हँसता है तो ऐसे जैसे
आसमान का चन्दा है
रोता है तो ऐसे जैसे
और नहीं कुछ धन्धा है
चुप करने की हर कोशिश पे
देता फेर ये रन्दा है...
वैसे तो आजकल सभी का
वक्त चल रहा मन्दा है
इसके कारण नानाजी का
चौपट सारा धन्धा है
होंगे सब भगवान के बन्दे
ये बस अपना बन्दा है

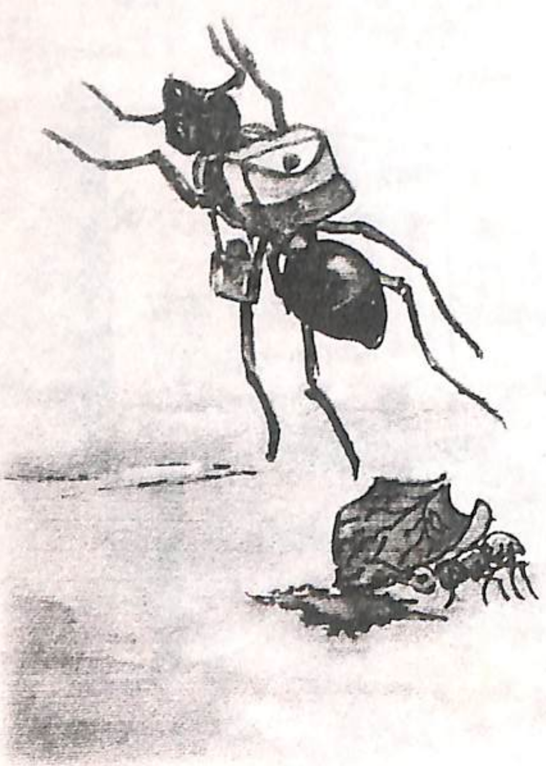
रमेशचंद्र शाह

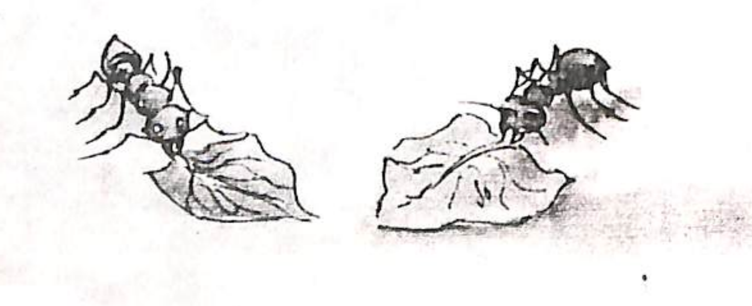


चींटी तुम...

चींटी तुम पल भर सुस्ता लो
भूख लगी है खाना खा लो
जल्दी क्या है, मुझे बताना
क्या तुमको भी पढ़ने जाना
बैठो जमकर बात करेंगे
बात बात में रात करेंगे

डॉ. मधुसूदन साहा

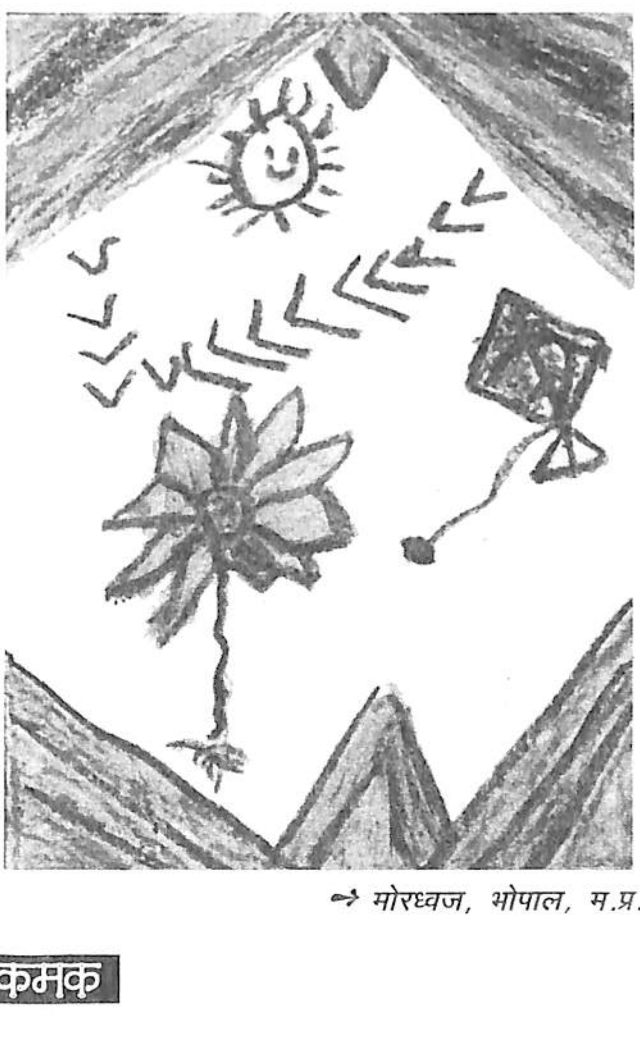




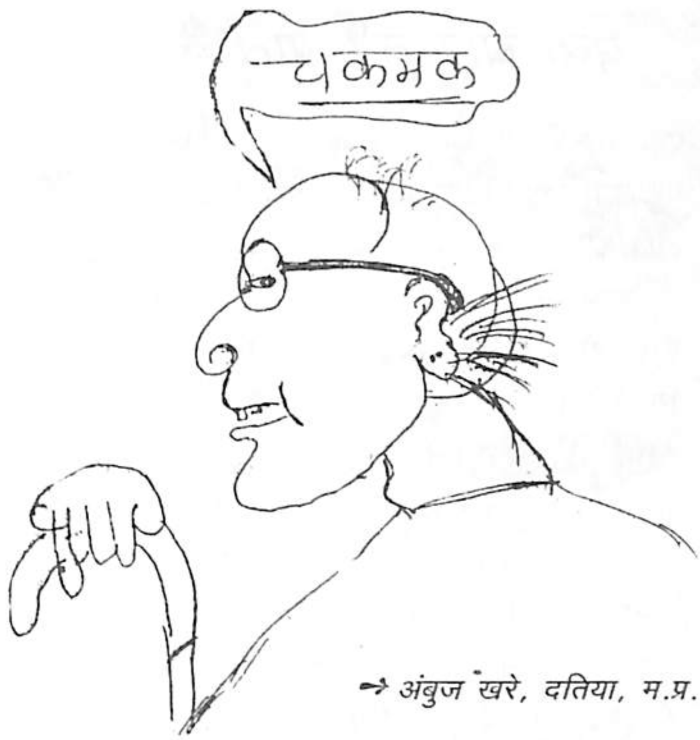
मेरी गर्मी की छुट्टी

मेरी गर्मी की छुट्टी बड़े मज़े से बीती। छुट्टियाँ शुरू हुई तब से 14 तारीख तक अपना छुट्टियों का गृहकार्य खत्म कर लिया। फिर अपनी नानी के घर गोरखपुर गई। मैं वहाँ अपनी मौसी की शादी के लिए गई थी। वहाँ से मैंने सामान भी लिया। मुझे जमके नींद आ रही थी। पर मैंने शादी देखी। मैंने रात में अच्छे से खाना भी नहीं खाया। मुझे तब बहुत गुस्सा आया जब मेरे मौसा ने मुझे सिर्फ 200 रुपए ही जूता चुराई में दिए। पर वो भी अब खो गए। जब मैं घर वापस लौट रही थी तब लोग रो रहे थे। वे चाहते थे कि मेरी मम्मी फैज़ाबाद न जाए। घर पहुँचते ही मैंने मम्मी से कहा- कितनी जल्दी छुट्टी बीत गई तो मम्मी ने कहा- पर अच्छे से बीती।

- नाम, पता नहीं लिखा



→ मोरध्वज, भोपाल, म.प्र.



→ अंबुज खरे, दतिया, म.प्र.

नानी का घर

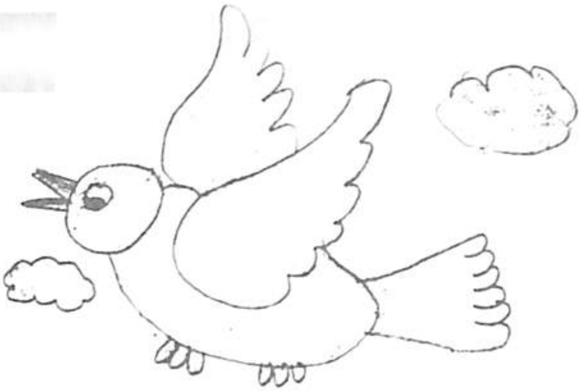
चलो चलें नानी के पास
जिनसे मिलने की है आस
जब गर्मी की छुट्टी आए
नानी संदेश भिजवाए
लड्डू पेड़े खूब बनाए
हमें बुलाकर रोज़ खिलाए
मई जून के दिन है खास
हमको अपने पास सुलाए
रोज़ कहानी एक सुनाए
नानीजी हमसे बतियाए
मामा हमको खूब घुमाए
यों बीते दिन पंख लगाए
विद्यालय खुलने के दिन आए
मम्मी बोली- अब घर जाएँ
नानी के नैना भर आए
नानाजी के भी
आँखों में भी आँसू भर आए

- प्रिया कृष्ण, फैज़ाबाद, उ.प्र.

एक बार की बात है

एक बार मैं अपने दोस्तों के साथ पिकनिक पर गया था हमें वहाँ बहुत मज़ा आया। लेकिन दो तीन घण्टे बाद हम लोग ने फुटबाल खेलना शुरू किया। लेकिन तभी हममें से कुछ बच्चे गलती से नदी में जा गिरे। उन लोगों ने हमसे मदद माँगी लेकिन हममें से उन्हें बचाने के लिए कोई भी तैयार न हुआ। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि वे मर जाएँगे उन्हें बचा लो। परन्तु वे न माने और उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि अगर इतना दम है तो उन्हें खुदी बचा लो। मैंने बोला कि मैं उन्हें बचा के दिखाऊँगा। मैंने किसी तरह से उनको नदी से बाहर निकाला और उनकी जान बचा ली।

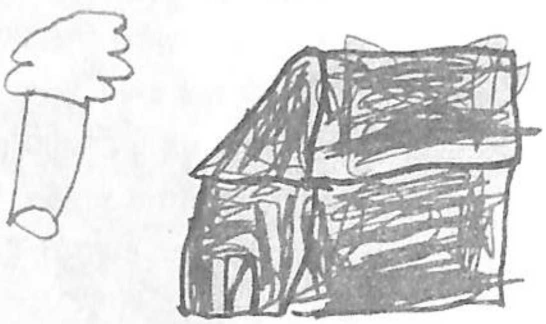
- वीर विक्रम सिंह, सातवीं, पहाड़ीबकसी, म.प्र.

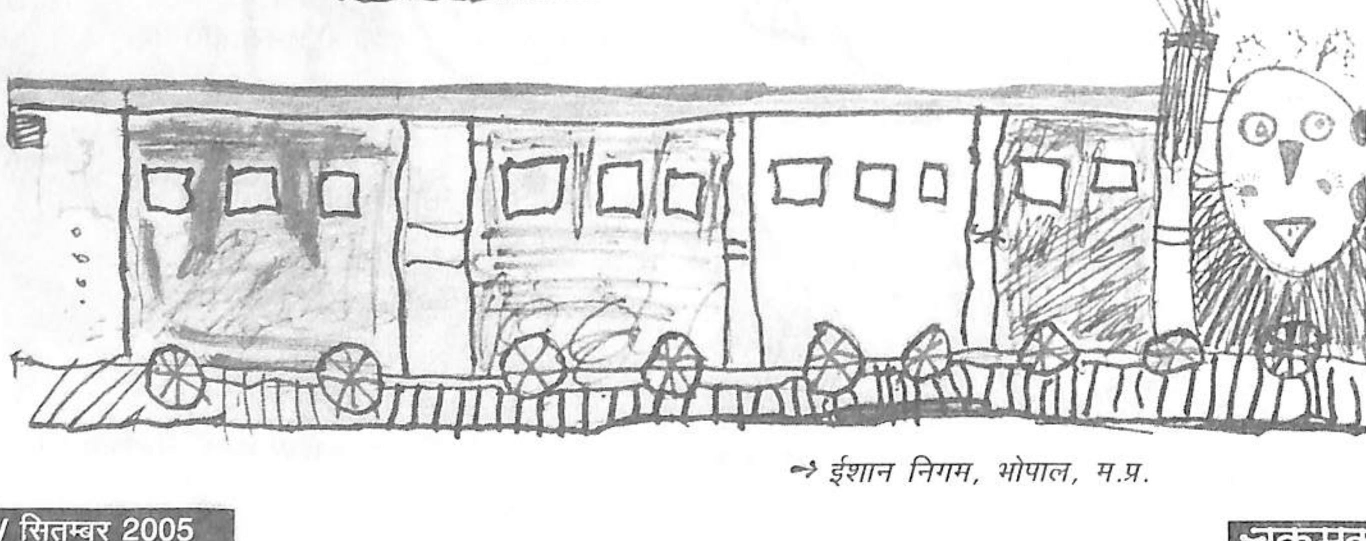


सच्ची घटना

एक दिन हम स्कूल से जा रहे थे तो मेरे दोस्त के पापा उस पटरी पर बुलाए। हमने एक तरफ देखा फिर जाने लगे तो उधर से कार आ रही थी हमने नहीं देखा और कार ने टक्कर मार दी। मुझे चोट नहीं लगी। लेकिन मेरा बस्ता फट गया। कापी गिर गई। फिर हम घर पर गये। तो मम्मी से कहा कि मेरा बस्ता फट गया है कार से लग गया था। तबसे हम दोनों तरफ देख कर चलते हैं।

- शुभम शर्मा, तीसरी, फैज़ाबाद, उ.प्र.





→ ईशान निगम, भोपाल, म.प्र.

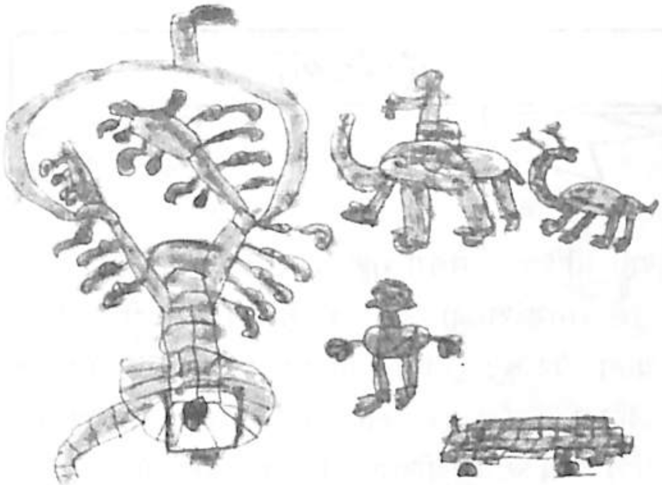
फूलों का देश

फूलों के देश में
स्वागत है सबका
छोटे, बड़े, बूढ़े या फिर हो बच्चा

भिन्न-भिन्न फूलों की बस्ती में
गुलाब, मोगरा, कमल हैं मुस्काते
सुन्दर-सी इक थाली में
सज-धज के हैं आते

फूलों का राजा है गुलाब
सब इसकी गाथा गाते
आपस में मिलकर रहना
सब फूल हैं बताते

- पलक पीड़ीहा, देवास, म.प्र.



→ अनिल, खातेगाँव, म.प्र.





→ तान्या भोपाल, म.प्र.

बचपन की यादें प्यारी

मेरे खेत की वो मेड़ सँकरी,
वो पेड़ के नीचे की नींद गहरी।
बारिश में उगी इमली की डीरी,
वो नित सुबह की धूप सुनहरी।

उन जंगलों की सैर प्यारी,
वो भैंसों पर की गई सवारी।
उन बंदरों से की गई यारी,
वो बहती नदियाँ प्यारी।

जब करते थे हम मस्ती,
मास्टरजी की डाँट पड़ती।
तब कुल्फी भी कितनी सस्ती,
चूसते थे डिब्बे से बूँदें टपकती

वो स्कूल के पीछे की क्यारी
जहाँ छिपाते थे पेम हमारी।
वो हमारे बचपन की यादें प्यारी,
अब कहाँ हैं वो बचपन की मौज सारी।

- पवन फुलफकीर, धार, म.प्र.

दुर्घटना

एक बार मैं अपनी दीदी के साथ साइकिल पर जा रही थी। उस समय मेरी आयु 5 वर्ष की थी। हम उस समय सब्जी लेने जा रहे थे। मेरी दीदी ने कहा- पैर दूर रखना। साइकिल में आ जाएगा। लेकिन मैं पाँव दूर रखते-रखते-रखते थक गई और पाँव पास में कर लिया। मेरा पाँव पास में आते ही बुरी तरीके से छिल गया। यह बात मेरे घर के गली के कोने की ही है। वहाँ से एक राहगीर ने मुझे घर तक छोड़ा। मेरे घर में मेहमान आए थे। मेरी मम्मी, पापा ने उन्हें छोड़कर मुझे ऐसे के ऐसे ही अस्पताल लेकर गए। वहाँ मेरा चेकअप हुआ। आज मैं 13 साल की हो गई। लेकिन 5 साल के हादसे को न भूल पाई।

- कृतिका धूत, नवमीं, उज्जैन, म.प्र.

लाया लाया लाया दूध आया

लाया लाया लाया दूध लेकर आया
ग्वाला भाई आया
डिब्बों में दूध लाया
गाय का दूध लाया
भैंस का दूध लाया
मम्मी ने पकवान बनाया
रबड़ी के मिठाई बनाया
सब बच्चों ने मिलकर खाया
ताली सबने खूब बजाया

- मनीषा यादव, तीसरी



निर्मल बरेला, कावड़, देवास, म.प्र.



- पंखुरी मिश्रा, तीसरी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

एक दिन जब मैं अपनी किस्मत पर रोया

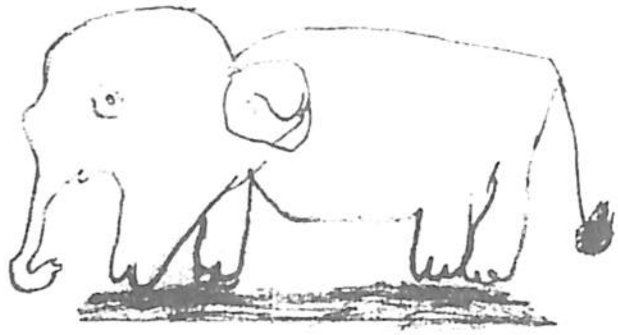
फूलों की एक क्यारी में मिट्टियों के बीच पड़ी खाद ने अपने बीते हुए दिनों के बारे में सोचना शुरू किया। वह भी दिन था जब मुझको सब्जियों पर से छीलकर रसोई के एक कूड़ेदान में डाल दिया गया था। फिर वहाँ से उठाकर मुझको घर के बड़े कूड़ेदान में डाल दिया गया। जहाँ पर मेरे साथ और भी बहुत से मेरे साथी थे। फिर वहाँ से उठाकर मुझको एक बड़े से गड्ढ़े में डाल दिया गया। और मुझ पर बहुत-सी मिट्टी डालकर ढक दिया गया। अब तो मैं बिल्कुल अँधेरे में थी। मुझे लगता था जैसे मेरी जिंदगी ही समाप्त हो जाएगी लेकिन चार महीने घोर अन्धकार में रहने के बाद अचानक एक दिन मुझे रोशनी दिखाई दी और मुझे वहाँ से उठाकर एक ऐसी क्यारी में डाला गया, जिसमें छोटे-छोटे पौधे लगे हुए थे। अब हम खुले आसमान के नीचे धूप और हवा में साँसें ले सकते थे। मुश्किल से कुछ दिन और बीते होंगे कि छोटे-छोटे पौधे बड़े हो गए और खूबसूरत सुगंधित फूलों से लद भी गए। अब तो हमारी खुशियाँ खूब बढ़ गई हैं। हम सुगंधित एवं सुन्दर वातावरण में रह रहे हैं।

- वर्तिका, चौथी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

लाल, पीली, हरी

पुलिस ने आवाज करी
लाल बत्ती जलने लगी।
सारी गाड़ी रुकने लगी
पीली बत्ती जलने लगी।
गाड़ी सारी तैयार होने लगी
हरी बत्ती जलने लगी।
गाड़ी सारी जाने लगी।

- नाम, पता नहीं लिखा



- देवेन्द्र प्रजापति, चौथी, मड़देवरा, म.प्र.

पृथ्वी और बुध

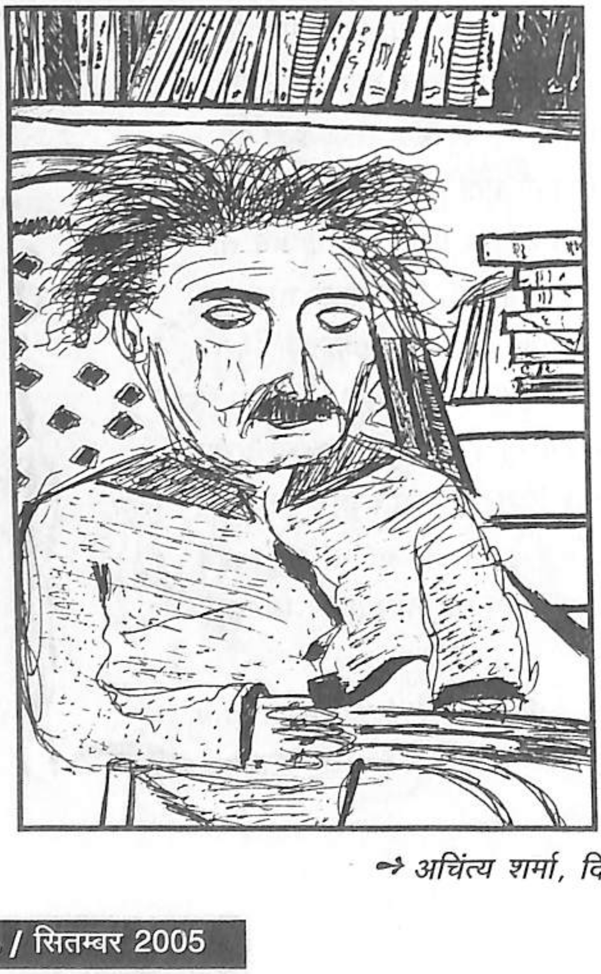
पृथ्वी और बुध में हुआ विवाद
सूरज रहेगा किसके पास

बुध ने कहा सूरज दादा
चलो मेरे साथ।

पृथ्वी बोली ऐसा न करना
प्यारे सूरज भाई
मर जाएँगे मुझ पर रहने वाले
पेड़-पौधे, व्यक्ति और जन्तु
तुम जो चले जाओगे
घिर जाऊँगी मैं अँधकार से

फिर सोचकर सूरज बोला
मैं हूँ आग का गोला
और सबका जीवनदाता
नहीं जा सकता मैं तुम दोनों के साथ
गया तो तुम हो जाओगे जलके राख
इसलिए मैं चला तुम सबसे दूर

- रीता सिंह, नवमीं, देवास, म,प्र.



→ अचिंत्य शर्मा, दिल्ली

तोत्तो-चान



इस बार हम तुम्हें एक मशहूर किताब 'तोत्तो-चान' के अंश पढ़वा रहे हैं। इस किताब की लेखिका हैं तेत्सुको कुरोयानागी। यह किताब उनके स्कूल और उनके शिक्षक कोबायाशी की सच्ची कहानी पर आधारित है। उनका स्कूल 'तोमोए' एक अलग किस्म का स्कूल था जहाँ बच्चे खेल-खेल में पढ़ा करते थे। जहाँ शिक्षक और बच्चों के रिश्ते बहुत दोस्ताना हुआ करते थे। एक ऐसा स्कूल जहाँ बच्चे उतने ही उत्साह से जाते थे जैसे वे खेलने, सर्कस देखने और सिनेमा देखने जाते हैं। यह किताब 'नेशनल बुक ट्रस्ट', दिल्ली से छपी है। अगर मौका मिले तो ज़रूर पढ़ना..

हेडमास्टर जी

जब माँ और तोत्तो-चान दफ्तर में घुसीं तो कुर्सी पर बैठे सज्जन उठ खड़े हुए।

उनके सिर पर बाल कम हो चले थे। कुछ दाँत भी गायब थे। पर चेहरा उनका स्वस्थ लगता था। बहुत लंबे भी नहीं थे वे सज्जन, पर उनके कंधों व बाँहों में मज़बूती लगती थी। उन्होंने काले रंग का एक घिसा-पुराना-सा थ्री-पीस सूट पहन रखा था।

जल्दी से झुककर तोत्तो-चान ने नमस्ते की और तब उत्साह से पूछा, आप स्कूल मास्टर हैं या स्टेशन मास्टर?

माँ अकुलाई। पर इसके पहले कि वह कुछ सफाई देती, सज्जन हँस पड़े और बोले, मैं इस स्कूल का हेडमास्टर हूँ।

तोत्तो-चान की खुशी का ठिकाना न रहा। 'मुझे बड़ी खुशी हुई', उसने कहा, 'क्योंकि मैं अब आपसे कुछ माँगना चाहती हूँ। मैं आपके स्कूल में पढ़ना चाहती हूँ।'

हेडमास्टर जी ने तोत्तो-चान को कुर्सी पर बैठने को कहा। फिर माँ की ओर मुड़कर वे बोले, आप घर जा सकती हैं, मैं तोत्तो-चान से बात करना चाहता हूँ।

तोत्तो-चान को थोड़ी-सी उलझन हुई। पर उसने सोच कर देखा तो लगा कि सामने बैठे सज्जन से बात करना उसे बुरा नहीं लगेगा।

'तो मैं इसे आपके पास छोड़े जा रही हूँ।' माँ ने बड़ी बहादुरी के साथ कहा और दफ्तर से निकलकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

हेडमास्टर जी ने एक कुर्सी खींची और तोत्तो-चान की कुर्सी के सामने बैठ गए। उन्होंने कहा, 'अब तुम मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ। कुछ भी, जो तुम बताना चाहो, बताओ।'

जो मुझे अच्छा लगे वह बताऊँ? तोत्तो-चान ने सोचा था कि वे प्रश्न करेंगे और उसे उत्तर देने होंगे। पर जब उससे यह कहा गया कि वह किसी भी चीज़ के बारे में बोल सकती है तो उसे बड़ा अच्छा लगा। वह तुरंत बोलने लगी। उसने जो कुछ कहा, वह था तो काफी गड्डमड्ड पर वह अपनी पूरी ताकत से बोलती गई। उसने हेडमास्टर जी को बताया कि जिस ट्रेन पर चढ़कर वे आए थे वह कितनी तेज़ चली थी; उसने बताया कि उसने

टिकट बाबू से कहा था कि वे उससे टिकट न लें पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी।

उसने बताया कि उसके दूसरे स्कूल की शिक्षिका कितनी सुंदर है, अबाबील का घोंसला कैसा है, उसका भूरा कुत्ता रॉकी कैसे-कैसे करिश्मे दिखा सकता है; उसने बताया कि वह कैंची मुँह में डालकर चलाया करती थी, पर उसकी शिक्षिका ने ऐसा करने से मना किया था, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं तोत्तो-चान की जीभ न कट जाए, पर वह फिर भी वैसा करती रही; उसने बताया कि वह नाक कैसे सिनक लेती है, क्योंकि उसकी बहती नाक अगर माँ देख लेती है तो उसे डाँट लगाती है; उसने बताया कि पापा कितने अच्छे तैराक हैं, और तो और वे गोता भी लगा सकते हैं।

वह लगातार बोलती गई। हेडमास्टर जी कभी हँसते, कभी सिर हिलाते और कहते, 'अच्छा, फिर?' तोत्तो-चान इतनी खुश थी कि वह आगे बोलती गई। बोलते-बोलते आखिर उसके पास बोलने को कुछ भी नहीं बचा। अब उसका मुँह बन्द था, पर वह अपने दिमाग पर ज़ोर डाल रही थी। सोच रही थी कि आगे क्या कहे?

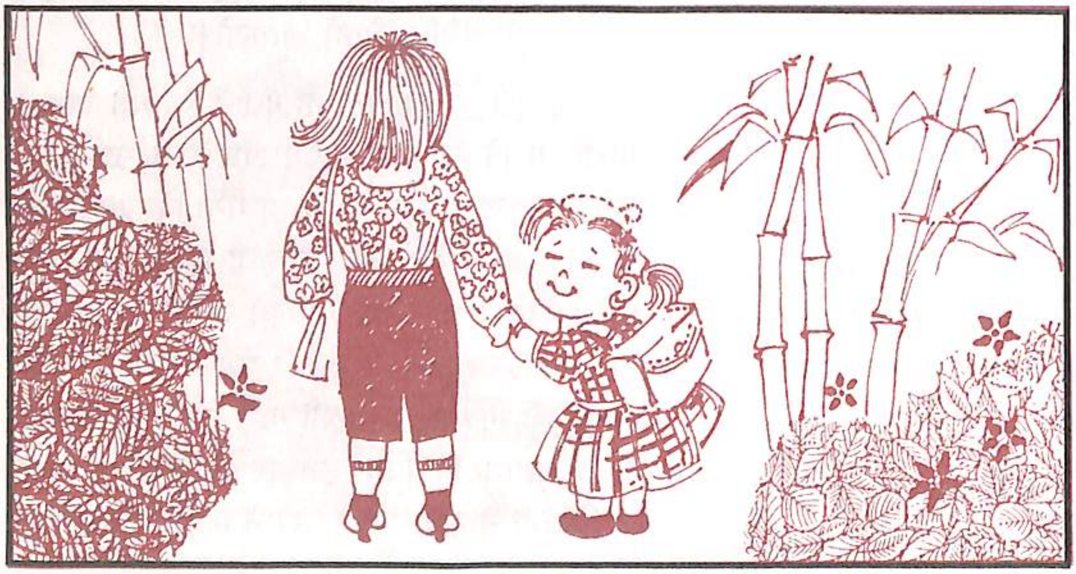
'मुझे और कुछ बताने को तुम्हारे पास क्या कुछ भी नहीं है?' हेडमास्टर जी ने पूछा।

ऐसे में चुप रहना कितने शर्म की बात है, तोत्तो-चान ने सोचा। कितना अच्छा मौका है। क्या वह किसी भी चीज़ के बारे में और कुछ भी नहीं बता सकती? उसने मन ही मन सोचा। अचानक उसे कुछ सूझा।

हाँ, वह अपनी फ्रॉक के बारे में बताएगी जो उसने पहन रखी थी। वैसे उसके ज़्यादातर कपड़े माँ खुद ही सीती थी, पर यह फ्रॉक दूकान से खरीदी हुई थी।

जब भी वह दोपहर के बाद स्कूल से घर लौटती थी तो अक्सर उसके कपड़े फटे होते थे। माँ को समझ ही न आता कि वे ऐसे कैसे फटे होंगे। उसकी सुंदर सफेद सूती चड्डियाँ भी कभी-कभी तार-तार हो जाती थीं। उसने हेडमास्टर जी को बताया कि ऐसा कैसे हो जाता था। असल में उसके कपड़े इसलिए फटते थे क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में झाड़ियों के बीच में से घुसती थी। साथ ही, वह खाली ज़मीन के चारों ओर लगे कँटीले तारों के नीचे से भी घुसती थी। इसलिए आज सुबह जब तैयार होने की बारी आई तो माँ की सिली हुई सारी अच्छी फ्रॉकें फटी निकलीं और उसे यह खरीदी हुई फ्रॉक पहननी पड़ी।

फ्रॉक पर लाल और सलेटी रंग के चेक बने थे, कपड़ा जर्सी का है। इतनी बुरी भी नहीं है, पर माँ को लगता है कि कॉलर पर कढ़े लाल फूल फूहड़ हैं। माँ को कॉलर पसंद नहीं है, तोत्तो-चान ने कालर उठाकर हेडमास्टर जी को दिखाया।





होती। क्योंकि, माँ और तोत्तो-चान सुबह आठ बजे स्कूल पहुँची थीं, और जब वह बोलना बंद कर चुकी और हेडमास्टर जी ने उसे बताया कि वह अब इस स्कूल की छात्रा है, तब उन्होंने अपने जेब से घड़ी निकाली और कहा, 'अरे, खाना खाने का समय हो गया!' यानी हेडमास्टर जी ने उसका बतियाना पूरे चार घण्टे तक सुना होगा।

इस दिन से पहले या उसके बाद किसी वयस्क ने तोत्तो-चान की बात इतने लम्बे समय तक नहीं सुनी। और सच तो यह है कि उसकी माँ और पिछली शिक्षिका को यह जानकर भी आश्चर्य होता कि एक सात साल की लड़की लगातार चार घण्टे बोलने का मसाला भी जुटा सकती है।

लेकिन इसके बाद खूब सोचने पर भी तोत्तो-चान को कुछ और न सूझा। उसे इस बात से कुछ दुख हुआ। लेकिन तभी हेडमास्टर जी उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना प्यार भरा बड़ा-सा हाथ उसके सिर पर रखा और कहा, अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो।

ठीक ये ही शब्द थे उनके। और उस समय तोत्तो-चान को लगा कि वह जीवन में पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति से मिली है जो उसे सच में अच्छा लगता हो। असल में इससे पहले किसी ने उसे इतनी देर बोलते नहीं सुना था। और तो और, उसे सुनते समय हेडमास्टर जी ने एक बार भी जम्हाई नहीं ली थी, न ही उनके चेहरे पर अरुचि का भाव आया था। शुरू से अंत तक उन्हें सुनना उतना ही अच्छा लगा था, जितना कि उसे बोलना।

तोत्तो-चान को अभी समय देखना नहीं आता था। फिर भी उसे लगा मानो काफी समय बीत चुका हो। अगर उसे समय देखना आता होता तो उसे ज़रूर और भी ज़्यादा आश्चर्य होता और शायद तब वह हेडमास्टर जी के प्रति कहीं ज़्यादा कृतज्ञ

उस वक्त तोत्तो-चान को यह तो पता ही नहीं था कि उसे स्कूल से निकाल दिया गया है और किसी को यह समझ नहीं आ रहा था कि उसका किया क्या जाए। उसकी स्वाभाविक खुशमिज़ाजी और भुलक्कड़पन के कारण वह भोली-भाली लगती थी। पर अंदर ही अंदर उसे यह तो लगता ही था कि उसे दूसरे बच्चों से कुछ अलग समझा जाता है, शायद कुछ अजीब भी। पर हेडमास्टर जी के सामने वह अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रही थी। वह बहुत खुश थी। वह हमेशा-हमेशा के लिए उनके ही साथ रहना चाहती थी।

ये भावनाएँ थीं तोत्तो-चान की उस पहले दिन हेडमास्टर सोसाकु कोबायाशी के बारे में। सौभाग्य से हेडमास्टर जी की भावनाएँ भी उसके प्रति ठीक ऐसी ही थीं। ●

सुडोकू

टुलटुल विश्वास

आजकल इस नई अंक पहेली का खूब बोलबाला है। हिन्दी-अंग्रेज़ी और कई अखबारों में इसने वर्ग पहेली या शब्द पहेली की जगह ले ली है। वैसे 'सुडोकू' शब्द जापानी है, पर इस पहेली की शुरूआत अमरीका के डेल प्रकाशन की पत्रिका **मैथ पज़ल्स एण्ड लॉजिक प्रॉब्लेम्स** में हुई थी। इसमें इसे अंक स्थान (नम्बर प्लेस) कहा जाता था। 1984 में जापान की पत्रिका **मंथली निकोलिस्ट** ने इसे सूजी वा डोकुशिन नी कागिरु नाम से प्रकाशित किया। इसका अर्थ है - संख्या को अकेले ही रहना है। बाद में इसे सू (संख्या) डोकू (अकेला) का नाम दिया गया। इस नाम से अब यह दुनिया भर में मशहूर है।

सुडोकू में आमतौर पर 9 x 9 खानों की एक जाली होती है। यह 3 x 3 खानों के 9 छोटे हिस्सों में बँटी होती है जिन्हें इलाका कहते हैं। कुछ खानों में पहले से अंक दिए रहते हैं। पहेली सुलझाने वाले को बस खाली पड़े खानों में 1 से 9 तक के अंक भरने होते हैं। हाँ, लेकिन यहाँ एक शर्त है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि किसी भी आड़ी लाइन, खड़ी लाइन या इलाके में 1 से 9 तक के सारे अंक केवल एक ही बार आना चाहिए। चलो, इसे एक सरल उदाहरण से समझते हैं -

	1	2	
2			1
1			4
	4	1	

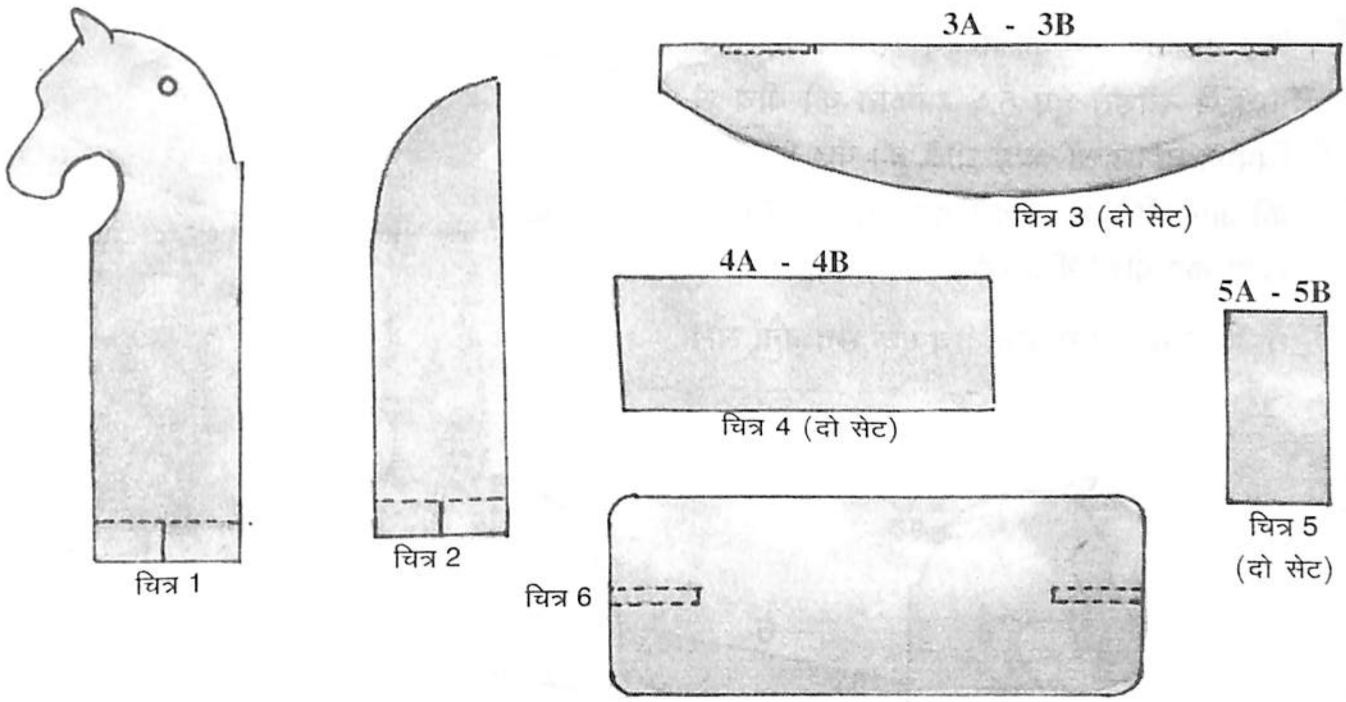
हमने यहाँ एक 4 x 4 खानों की जाली बनाई है। इसमें 2 x 2 खानों से बनने वाले 4 इलाके हैं। इन्हें अलग दर्शाने के लिए रंग दिया है और 2 को खाली छोड़ दिया है। इसमें कुछ खानों में अंक दिए हुए हैं। बाकी के तुम्हें भरना है। भरते समय यह ध्यान रखना कि किसी भी आड़ी लाइन, खड़ी लाइन या इलाके में 1 से 4 तक के अंक सिर्फ एक ही बार आना चाहिए।

जब ऊपर की आसान पहेली को हल कर लो तो फिर नीचे दिया असली सुडोकू भी हल करने की कोशिश करना।

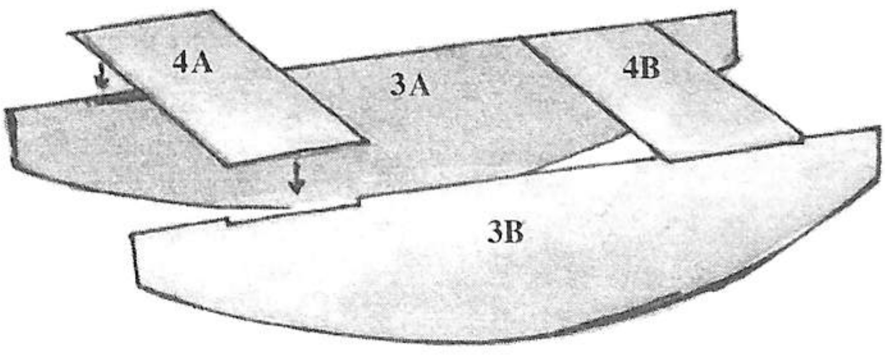
3		5	6		8	9		2
	7			1			4	
9		2	3		5	6		8
5		7		9		2		4
	3	4	5		7	8	9	
8		1		3		5		7
1		3	4		6	7		9
	8			2			5	
4			7		9	1		3

घोड़ा गाड़ी

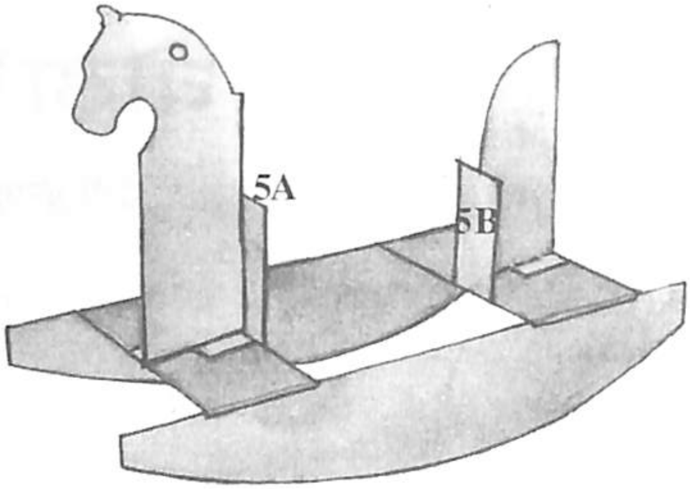
सामग्री - मोटी शीट, कैंची, रिफिल या उसी मोटाई वाली तीन 3 इंच लम्बी डंडी, गोंद या फेवीकोल।



1. ऊपर दी हुई सभी आकृतियाँ मोटी शीट से काट लो।
2. आकृति 1 और 2 में नीचे से बिन्दु बनी लाइन तक बीचोंबीच एक कट लगा लो। कट लगे हिस्सों को एक दूसरे की विपरीत दिशा में मोड़ लो ताकि वे आसानी से खड़े हो सकें।
3. चित्र 3A, 3B में जहाँ एक पट्टी का निशान बना है, उतने हिस्से को काट लो।
4. चित्र 6 में भी बिंदुओ से बनी पट्टी को काटकर अलग कर लो।
5. अब नीचे दिखाए चित्र के अनुसार आकृति 3A और 3B को आमने-सामने रखकर आकृति 4A और 4B को उस पर चिपका दो।



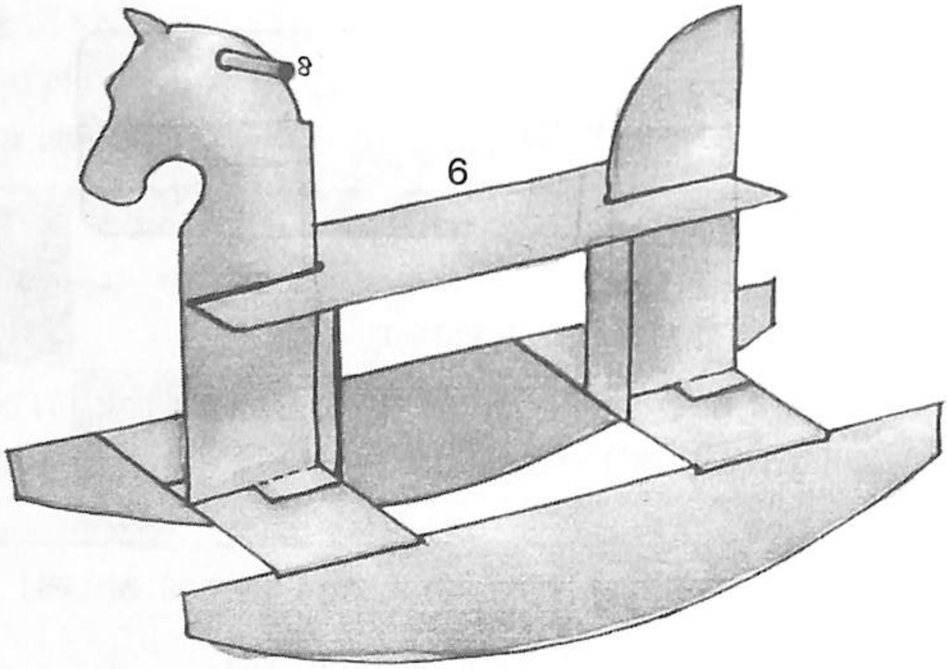
6. अब तुम्हें तीन चीज़ें करनी हैं...



चित्र में दिखाए अनुसार घोड़े के मुँह और दुम को 4A और 4B पर खड़े रखकर बीचों बीच चिपका दो।

चित्र देखकर घोड़े की गरदन पर पीछे की तरफ नीचे से जोड़ते हुए 5A आकृति को बीच से चिपका दो। इसी तरह घोड़े की पूँछ पर आगे की ओर नीचे से जोड़ते हुए 5B आकृति को खड़ा कर बीचों बीच जोड़ दो।

घोड़े की गरदन में बीचोंबीच एक छेद बना लो।



7. आकृति 6 के कटे हुए हिस्सों को आकृति 5A और 5B के ऊपर गरदन और दुम के बीच फँसा दो।

8. अब घोड़े की गर्दन में बने छेद में रिफिल या उतनी ही बड़ी कोई चीज़ डाल दो।

लो हो गया घोड़ा तैयार। अब तुम इस पर बड़े मज़े से सवारी कर सकते हो।

प्रस्तुति - कार्तिक शर्मा



मेरे बच्चे को सिखाएँ...

-अब्राहम लिंकन

अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने यह पत्र अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा था। यह पत्र एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

प्रिय गुरुजी,

सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते, और न ही सब सच बोलते हैं। यह तो मेरा बच्चा कभी न कभी सीख ही लेगा। पर उसे यह अवश्य सिखाएँ, कि अगर दुनिया में बदमाश लोग होते हैं, तो अच्छे नेक इंसान भी होते हैं। अगर स्वार्थी राजनीतिज्ञ हैं, तो जनता के हित में काम करने वाले देशप्रेमी भी हैं। उसे यह भी सिखाएँ कि अगर दुश्मन होते हैं, तो दोस्त भी होते हैं। मुझे पता है कि इसमें समय लगेगा। परंतु हो सके तो उसे यह जरूर सिखाएँ, कि

चाहे सभी लोग उसे गलत कहें, परंतु वह अपने विचारों में पक्का विश्वास रखे और उन पर अडिग रहे। वह भले लोगों के साथ नेक व्यवहार करे और बदमाशों को करारा सबक सिखाए।

जब सब लोग भेड़ों की तरह एक ही एक रास्ते पर चल रहे हों, तो उसमें भीड़ से अलग होकर अपना रास्ता बनाने की हिम्मत हो।

उसे सिखाएँ, कि वह हरेक की बात को धैर्यपूर्वक सुने, फिर उसे सत्य की कसौटी पर कसे और केवल अच्छाई को ही ग्रहण करे।



मेहनत से कमाया एक पैसा भी, हराम में मिली नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

उसे हारना सिखाएँ, और जीत में खुश होना भी सिखाएँ। हो सके तो उसे राग-द्वेष से दूर रखें, और उसे अपनी मुसीबतों को हँसकर टालना सिखाएँ। वह जल्दी ही यह सब सीखे कि बदमाशों को आसानी से काबू में किया जा सकता है।

अगर संभव हो तो उसे किताबों की मनमोहक दुनिया में अवश्य ले जाएँ। साथ-साथ उसे प्रकृति की सुंदरता-नीले आसमान में उड़ते आज़ाद पक्षी, सुनहरी धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ और पहाड़ के ढलानों पर खिलखिलाते जंगली फूलों की हँसी को भी निहारने दें। स्कूल में उसे सिखाएँ कि नकल करके पास होने से फेल होना बेहतर है।

अगर हो सके तो उसे दुख में भी हँसने की सीख दें।

उसे समझाएँ कि अगर रोना भी पड़े, तो उसमें कोई शर्म की बात नहीं है। वह आलोचकों को नज़रअंदाज़ करे, और चाटुकारों से सावधान रहे। वह अपने शरीर की ताकत के बलबूते पर भरपूर कमाई करे परंतु अपनी आत्मा और अपने ईमान को कभी न बेचे। उसमें शक्ति हो, कि चिल्लाती भीड़ के सामने भी खड़ा होकर, अपने सत्य के लिए जूझता रहे। आप उसे तसल्ली से सिखाएँ, परंतु बहुत लाड़-प्यार में उसे बिगाड़ें नहीं। उसे हमेशा ऐसी सीख दें कि मानव-जाति पर उसकी असीम श्रद्धा बनी रहे।

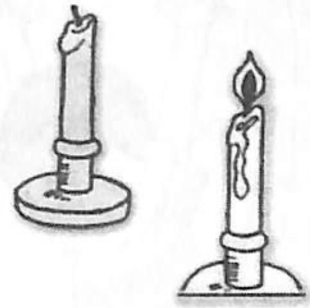
मैंने अपने पत्र में बहुत कुछ लिखा है। देखें, इसमें से क्या करना संभव है।





चित्र – उदय खरे

एक मोमबत्ती लो। उसे माचिस से जला लो। इस प्रयोग को करते समय अपने किसी बड़े की मदद लेना।

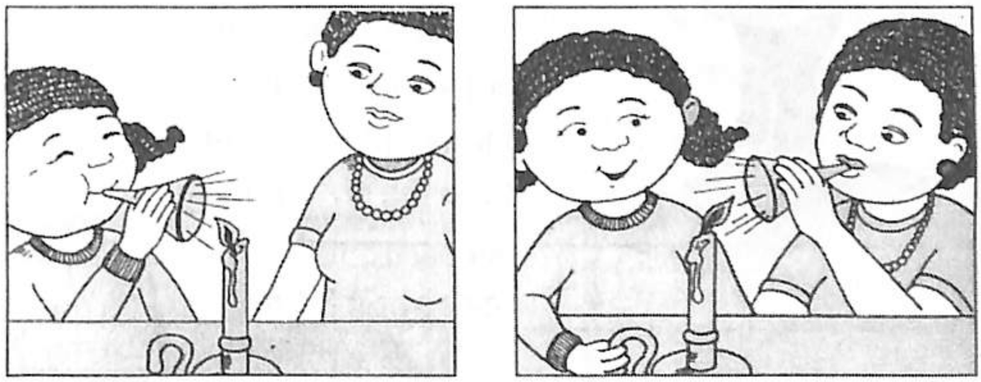


जली हुई मोमबत्ती को फूँक मारकर बुझाओ। क्या आसानी से बुझ गई?

अब एक चुंगी (कीप) लो। इस कीप के सहारे फूँक मारकर मोमबत्ती को बुझाओ। क्या हुआ?

अब अपने बड़े/दोस्त से कहो कि वह चुंगी से फूँक मारकर मोमबत्ती को बुझाए।

देखो कि मोमबत्ती की लौ किस तरफ जा रही है? और क्यों?





एक स्केल लो। उसे ज़मीन पर रखकर अपने एक पंजे की लम्बाई नापो।

इसे कॉपी में लिख लो। अब अपने दूसरे पंजे को भी इसी तरह नापो।



क्या दोनों पंजों का नाप बराबर है?

अब अपने दोस्त की मदद से अपने हाथों को नापो।

क्या दोनों हाथों की लम्बाई बराबर है?



क्या तुम्हारे आसपास वज़न नापने की मशीन है? अगर है तो एक गतिविधि तुम और कर सकते हो। इस मशीन पर दोनों हाथ ऊपर करके खड़े हो जाओ। अपने दोस्त से पूछो कि इस हालत में तुम्हारा वज़न कितना है?

अब चित्र में दिखाए अनुसार झुक जाओ। देखो कि मशीन कितना वज़न दिखा रही है। क्या मशीन अब भी उतना ही वज़न दिखा रही है? वैसे तुम देखोगे कि थोड़ी ही देर में मशीन तुम्हारे असली वज़न पर आ गई है।





एक गुब्बारा लो।

इसे फुला लो।

अच्छा बताओ कि अगर इस गुब्बारे में पिन चुभाएँ तो क्या यह पिचक जाएगा?

अच्छा ज़रा ऐसा करके देखो। एक सेलो टेप के कुछ टुकड़े इस गुब्बारे पर चिपका दो।

अब टेप के इन टुकड़ों पर पिन चुभा दो।

क्या गुब्बार पिचक गया? दोनों स्थितियों में क्या फर्क है? ●



रसीले चौकीदार

एच. एस. राधा

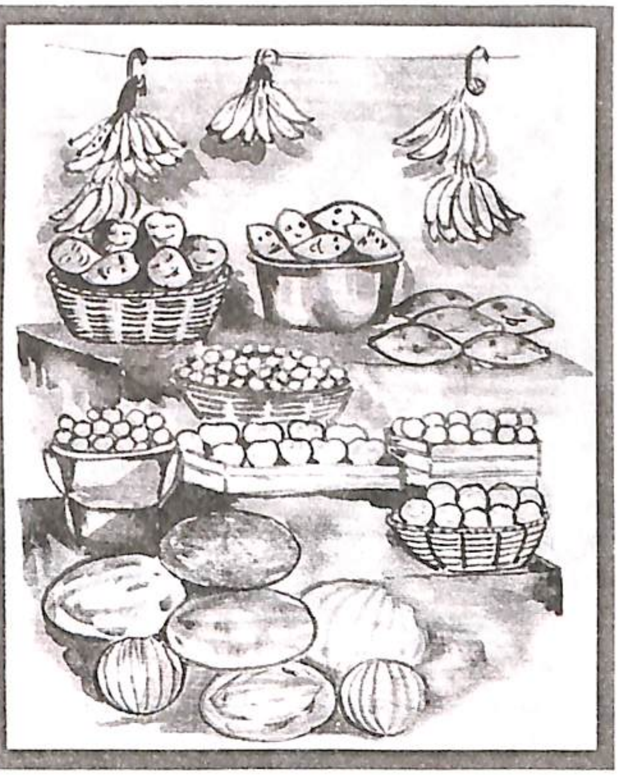
फलों की दूकान के भीतर गपशप चल रही थी। टोकरियों और डिब्बों में रखे आम, ठंडक में रखीं रसभरी, बाल्टियों में पड़े नींबू, रस्सियों से लटकते केले, ज़मीन पर ढेर बनाए पसरे तरबूज और खरबूज, लकड़ी की पेटियों में सजे सँवरे संतरे और चीकू तथा एक तरफ जमे पपीते... सब आपस में बातें कर रहे थे।

रात का समय था। फलों की दूकान का मालिक मोटू बाहर खड़ा अपने पड़ौसी रस्सी की दूकान के मालिक शंभू से बातें कर रहा था।

"तुमने सुना? कल रात मिनी बाज़ार में फलों की दूकान में चोरी हो गई। सब कुछ साफ हो गया। चोरों ने केले तक नहीं छोड़े।" शंभू बोला।

"तो चौकीदार क्या कर रहा था?" मोटू ने पूछा।

"चोरों ने चौकीदार के सिर पर डंडा मारकर उसे बेहोश कर दिया और सारा माल बाहर खड़े ट्रक में भरकर रफूचक्कर हो गए।"



मोटू सोच में पड़ गया।

"सम्भलकर रहना मोटू! तुम बहुत गहरी नींद में सोते हो। चोर आ गए तो तुम्हारे सिर पर तो उन्हें डंडा भी नहीं मारना पड़ेगा। तुम खर्राटे ही भरते रह जाओगे और तुम्हारी दुकान साफ हो जाएगी।"

"नहीं, नहीं, शंभू। आज मैं ऐसा करूँगा कि सोऊँगा ही नहीं। चुपचाप बैठा रहूँगा और किसी चोर ने दूकान में घुसने की हिम्मत की तो उसे फौरन दबोच लूँगा। तुम देखना।"

"ठीक है।" शंभू ने कहा और दूकान बंद करके घर चला गया। मोटू ने दूकान का दरवाज़ा भीतर से बन्द किया, टेपरिकॉर्डर चलाया और बत्ती बंद करके तख्ते पर बैठ गया।

फलों ने चुप्पी साध ली। मोटू गाने के साथ हाथ की उंगलियों से ताल देता जा रहा था लेकिन पता नहीं कब उसकी आँख लग गई। उधर कैसेट खत्म हुई, इधर मोटू की नाक बजने लगी। कुछ ही देर में दूकान मोटू के खर्राटों से गूँजने लगी।

रात के कोई डेढ़ बजे बाहर कुछ खटका हुआ। सारे फल साँस रोककर बाहर हो रही आवाज़ें सुनने लगे।

आम ने फुसफुसाकर केले से पूछा- "ऐ केलू! क्या बात है? तू तो ऊपर है। ज़रा रोशनदान से झाँककर देख न।"

"लगता है बाहर कोई है।" केले ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

"कोई दिख रहा है?" आम ने पूछा।

"नहीं। बाहर अँधेरा है।"

"चोर हो तो? मोटू को जगाएँ क्या?" रसभरी ने पूछा।

नींबू ज़ोर से हँसा। "पागल हो गयी है? मोटू को जगाने के लिए तो पूरा पुलिस बैंड मँगाना पड़ेगा।"

दूसरे फल भी हँसने लगे।

"मुझे बहुत डर लग रहा है।" कुछ देर बाद पपीते की आवाज़ आई।

"चिंता मत करो पप्पी! हम लोग कुछ करते हैं।" आम ने कहा।

तभी केले ने कहा- "श्श...। वो रोशनदान खोलने की कोशिश कर रहे हैं। दो आदमी हैं। उनके पास टॉर्च भी है।"

आम ने नींबू से कहा- "सुन! फटाफट तैयार हो जा। जैसे ही चोर अपना सिर अन्दर घुसेड़े, उसकी आँखों में अपना रस निचोड़ देना।"

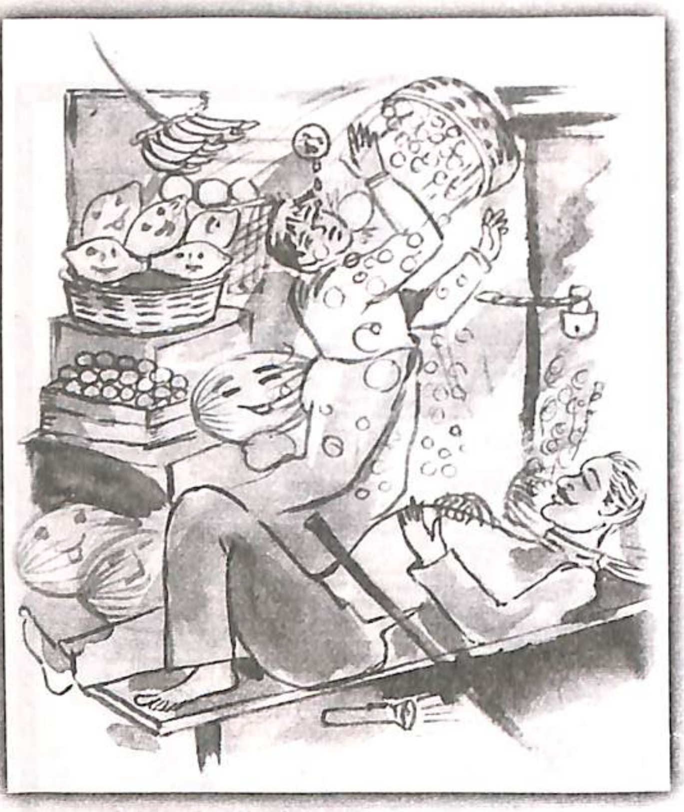
"आम भाई, मैं कुछ करूँ?" रसभरी ने पूछा।

"तू क्या करेगी?" आम ने पूछा

"सड़ी रसभरी का पूरा टोकरा उस पर उलट जाए तो?"

"वाह!" चीकू बोला। "अच्छा रहेगा। मज़ा आएगा।" सब हँसे।

आम ने डाँटकर सबको चुप किया।



सब चुप हो गए। अब सिर्फ मोटू के खर्राटों की आवाज़ आ रही थी।

कुछ देर बाद एक चोर रोशनदान से भीतर घुसा। उसने चारों तरफ टॉर्च घुमाकर देखा और बाहर खड़े दूसरे चोर से बोला- "रास्ता साफ है।"

जैसे ही चोर पपीते को उठाने के लिए झुका, नींबू ने उसकी आँख में रस निचोड़ दिया। उसके हाथ से टॉर्च छूट गयी।

वह 'हाय रे! हाय रे!' करता आँखें मसलने लगा।

तभी सड़ी रसभरियों का पूरा झुण्ड उसके सिर पर कूद पड़ा। चोर उनके खट्टे-चिपचिपे रस से नहा गया। उसे समझ में ही नहीं आया कि क्या करे।

तभी आम ने अपने साथियों को ललकारा "बढ़ो जवानो!" और एक के बाद एक कच्चे-पक्के आम निशाना साधकर चोर के सिर पर कूदे।

चोर को समझ में नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है?

डर के मारे उसके मुँह से चीख निकल गई।

चोर की चीख सुनकर मोटू की आँख खुल गई। उसने झट बत्ती जला दी। उसने चोर को पकड़ लिया।

दूकान के भीतर होती चीख-पुकार को सुनकर बाहर खड़े चोर के साथी भाग गए।

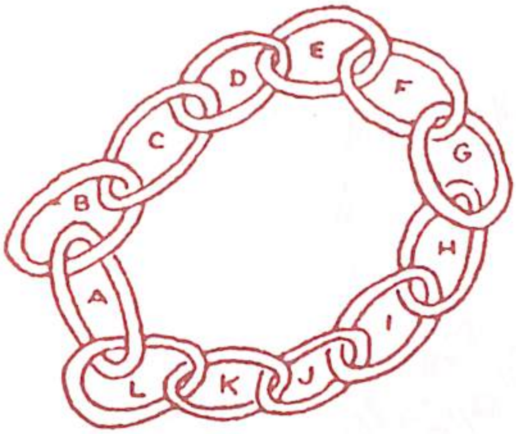
मोटू ने चोर के हाथ बाँध दिए और उसे पुलिस के हवाले कर दिया। फिर सारे फलों को अपनी-अपनी जगह ठीक से जमाया।

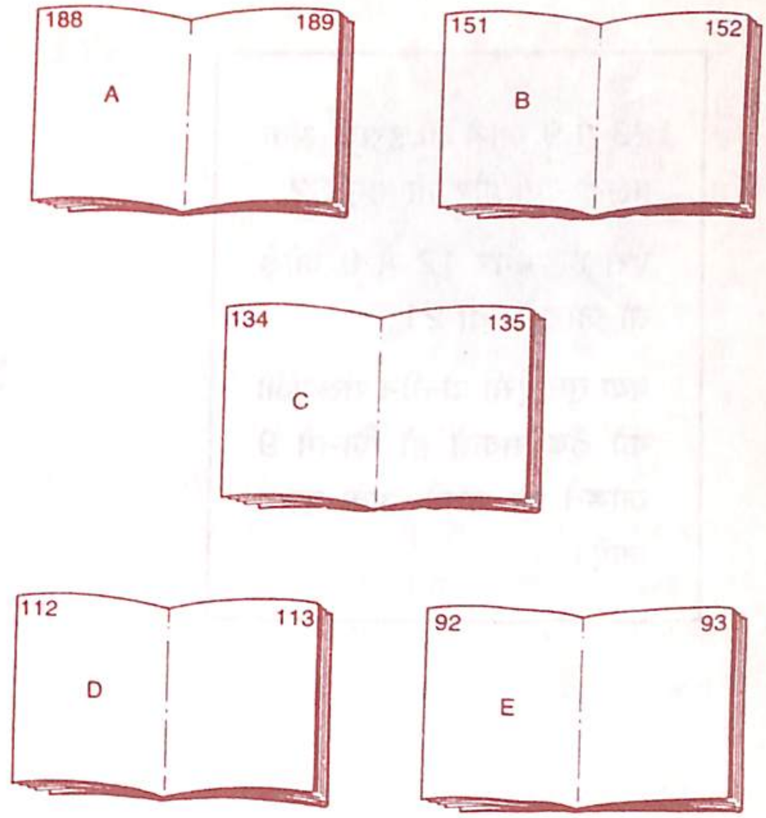
अगली सुबह मोटू शंभू से कह रहा था - "देखा। पकड़ लिया न मैंने चोर को। मजाल है जो एक मिनिट भी झपकी ली हो। ज़रा-सी भी लापरवाही करता तो मेरी तो पूरी दूकान लुट जाती।"

मोटू की बात सुनकर सभी फल कनखियों से एक-दूसरे को देखकर मुस्कराने लगे।

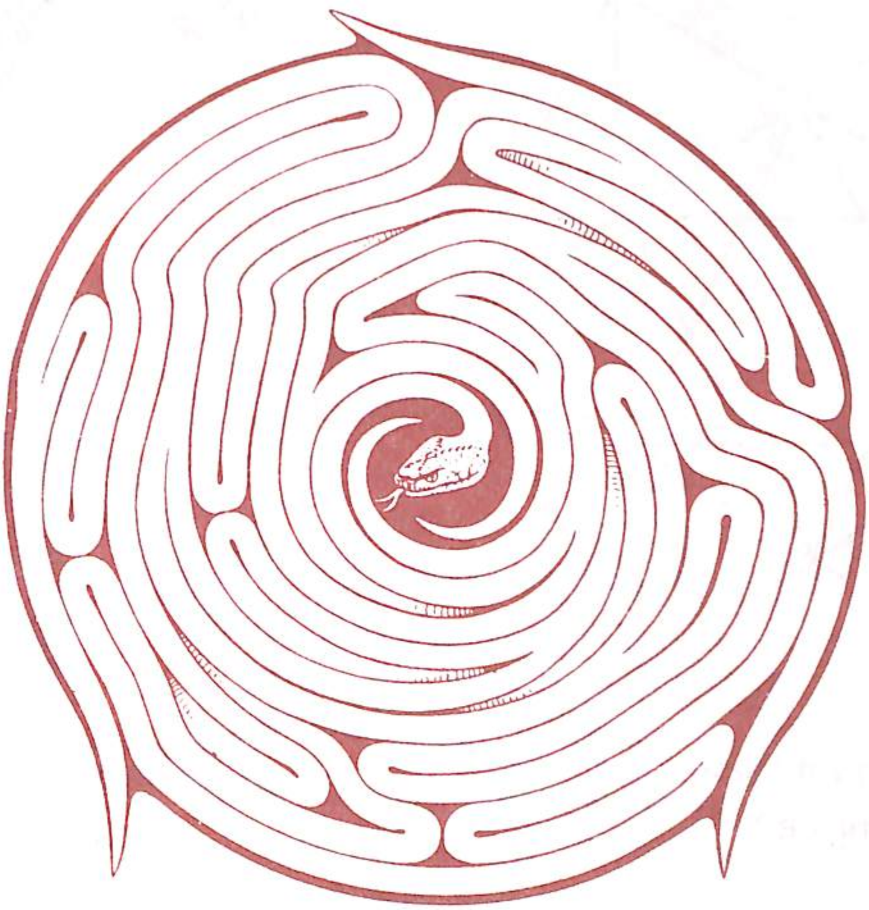
चित्र- अशोक चंचल

कौन-सी कड़ियाँ कमज़ोर हैं? कहाँ से यह ज़ंजीर टूट जाएगी?





इन पाँच किताबों में से एक बेमेल है। कौन-सी?

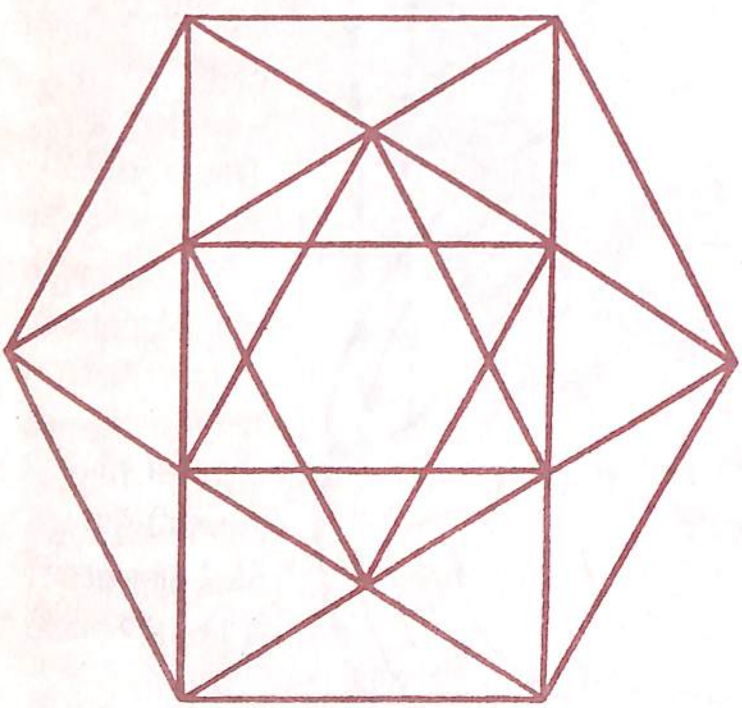


इस साँप की पूँछ कौन-सी है?

23 में 9 जोड़े तो इसके अंक पलट गए और हो गए 32.

ऐसे ही अगर 12 में 9 जोड़े तो जोड़ आया 21.

क्या तुम ऐसी दो-तीन संख्याओं को ढूँढ़ सकते हो जिनमें 9 जोड़ने पर उनके अंक पलट जाएँ।

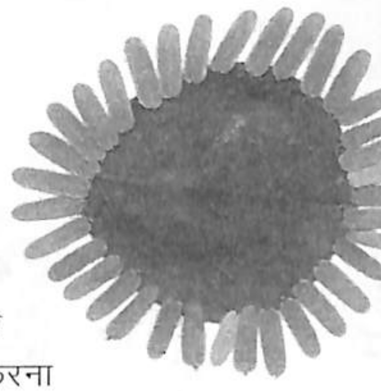


इस चित्र में कितने त्रिभुज हैं?



कौन-सी दो पतंगें बिल्कुल एक-सी हैं?

प्रवेश उत्सव


अनिता साहू, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

भोपाल के 'शासकीय नवीन उ.मा. विद्यालय' में दस दिनी प्रवेश उत्सव मनाया गया। इस उत्सव में बच्चों और शिक्षकों ने कई गतिविधियाँ एक साथ कीं। इस उत्सव की योजना और कार्यान्वयन का काम एकलव्य, भोपाल ने किया। इस उत्सव का उद्देश्य बच्चों की पढ़ाई को बोझिल होते जाने से बचाना था। साथ ही उन बच्चों को पढ़ाई के प्रति आकर्षित करना जिन्होंने स्कूल में अभी-अभी दाखिला लिया है। इस सत्र में ऐसे कई बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिया गया जो किन्हीं कारणों से अभी तक स्कूल नहीं जा रहे थे।

पूरे दस दिन स्कूल में एक अलग माहौल बना रहा। रोज़ शिक्षकों ने बच्चों के साथ मिलकर कई चीज़ें सीखीं। बच्चों से बातें कीं। शिक्षक और बच्चों में दोस्ताना सम्बन्ध बने। इन गतिविधियों से कई बातें स्पष्ट रूप से सामने आईं। मसलन कक्षा में पढ़ाई के दौरान बच्चों की भागीदारी ज़्यादा से ज़्यादा होने से पढ़ाई में बोझिलता नहीं आती। किसी गतिविधि या प्रयोग के ज़रिए सिखाना ज़्यादा आसान होता है। पूरे दस दिन बच्चों ने इन अलग तरह की कक्षाओं में उत्साह से भाग लिया। कभी-कभी तो छुट्टी हो जाने के बावजूद वे कक्षा में सीखने का आग्रह करते। शायद शिक्षकों ने गौर किया हो कि ये वही बच्चे हैं जो आम दिनों में छुट्टी हो जाने का इंतज़ार करते रहते हैं।



गतिविधियों में आसपास ही आसानी से उपलब्ध हो सकने वाली चीज़ों से विज्ञान के प्रयोग करके देखे गए। उन पर चर्चा की गई। यह कोशिश की गई कि इस चर्चा में हर छात्र-छात्रा शामिल हो। बिना झुँझलाए इत्मीनान से बच्चों के सवालों और टिप्पणियों को ध्यान से सुना गया। उन्हें बेझिझक बोलने को उकसाया गया। शिक्षकों और बच्चों ने एक साथ मिलकर कागज़ के एक से एक खिलौने बनाए। शायद शिक्षकों ने देखा हो कि सीखने में बच्चे उस्ताद हैं। अकसर वे कोई गलत मोड़ बना देते और उनके पास बैठा छात्र या छात्रा उन्हें बताती, 'ऐसे नहीं सर, ऐसे।' पत्तियों से चित्र रचने की गतिविधि भी हुई। बच्चों ने पत्तियों में नई-नई शक्लें खोजीं। गणित अकसर बच्चों द्वारा कम पसंद किया जाना वाला विषय समझा जाता है। पर गणित पर आधारित गतिविधियाँ भी बच्चों ने शौक से कीं।

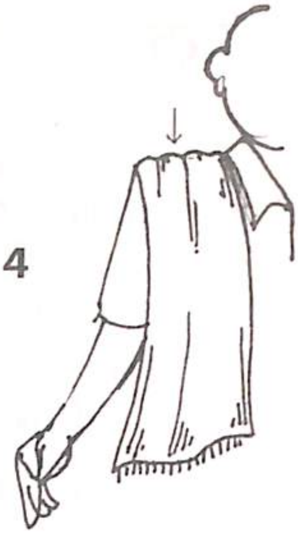

निर्मला सोनी, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

एक गतिविधि बच्चों के सपनों के बारे में थी। इसमें बच्चों ने लिखा कि भविष्य में वे क्या करना चाहते हैं। सबने अपने सपनों के बारे में लिखा। एक और मज़ेदार गतिविधि थी 'संपादक के नाम पत्र लिखना।' बच्चों ने अपने आसपास की तमाम समस्याओं के बारे में विभिन्न दैनिक अखबारों के संपादकों को पत्र लिखे। इन पत्रों में एक खास बात यह उभरी कि बच्चों ने व्यक्तिगत समस्याओं की जगह अपने आसपास की समस्याओं पर चिंता जताई। इन गतिविधियों में संगीत के बारे में भी बच्चों से बातचीत हुई और शिक्षिका के साथ मिलकर बच्चों ने खूब गाने गाए। ●

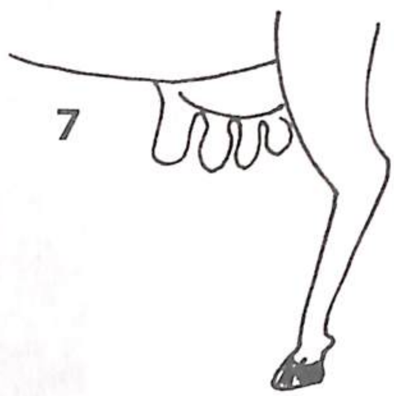
संकेत बाएँ से दाएँ

1	■	2		3	■	4	5	
6			■	7		■		■
	■		■		■	8		9
■	10	■	11		12	■	■	
13			■	■	14		15	■
	■	■	16	17		■		■
18	19		■		■	20	■	21
■		■	22		■	23		
24			■	25			■	

2


4


6

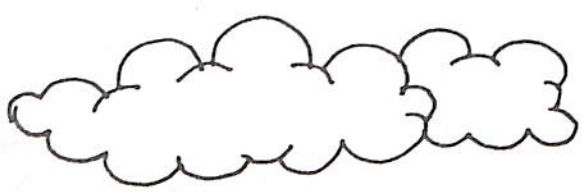

7


8


11

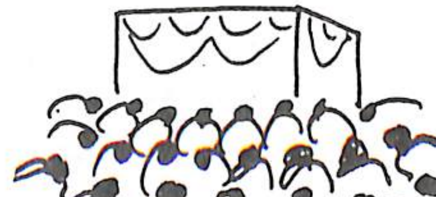

13


14

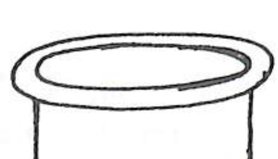



16 'कागज़ की मीन' में है धरती

18

22


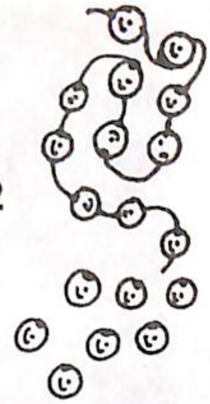
23

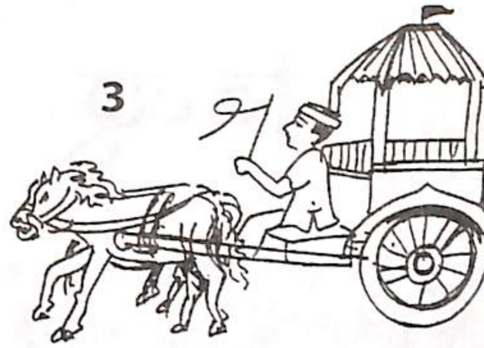

24


25 जिससे कम्प्यूटर पर डाक आती-जाती है

संकेत ऊपर से नीचे

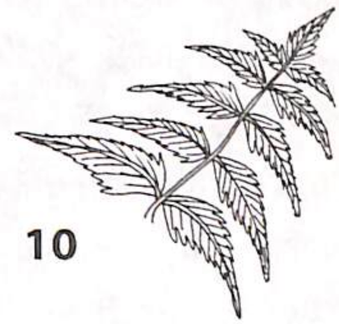
1


2


3


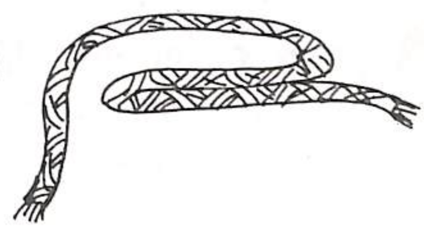
5


9

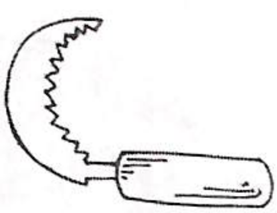

10


12 आमिर खान की एक प्रसिद्ध फ़िल्म

13


15


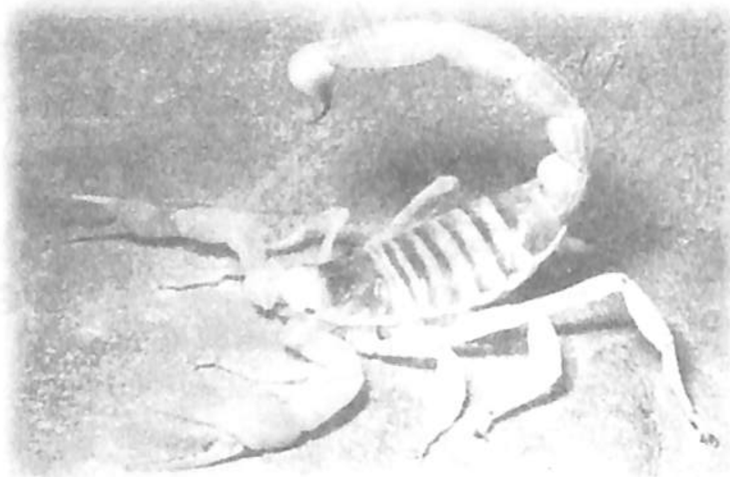
17


19


20


21


बिच्छू



बिच्छूओं के निकलने का मौसम है। बिच्छू के काट लेने पर बहुत दर्द होता है। बिच्छू के ज़हर से कभी-कभी इंसान मर भी जाता है। आओ, हम देखते हैं कि बिच्छू क्यों काटता है और अगर किसी को बिच्छू काट ले तो हमें क्या करना चाहिए।

लेकिन इससे पहले हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि बिच्छू क्या है? कहाँ रहता है? घर में क्या करने आता है?

धरती का सबसे पुराना निवासी

बिच्छू धरती का सबसे पुराना जीवित प्राणी माना जाता है। उसके मूलरूप, शारीरिक बनावट और देहतंत्र में पिछले तीन खरब वर्ष में कोई बदलाव नहीं आया है। आज जो बिच्छू हम देख रहे हैं, तीन सौ लाख साल पहले भी वे ऐसे ही दिखाई देते थे।

बिच्छू किसी ज़माने में पानी के जीव थे जो बाद में ज़मीन पर रहने लगे। उन्होंने परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को ढाल लिया। बहुत दिनों तक लोग बिच्छू को कीट समझते रहे



लेकिन वैज्ञानिकों ने जब बिच्छू का विधिवत अध्ययन किया तो पाया कि वह एक सन्धिपाद है। सन्धिपाद यानी ऐसा जीव जो पांवों को मोड़कर चलता है, पेट के बल नहीं रेंगता। मकड़ी और केंकड़ा भी इसी प्रकार के जीव हैं।

बिच्छू का डंक

बिच्छू की अनेक प्रजातियाँ होती हैं। सब ज़हरीली नहीं होतीं। यूँ तो हर बिच्छू के डंक में कुछ न कुछ ज़हर ज़रूर होता है। इसलिए बिच्छू जब डंक मारता है तो तेज़ दर्द होता है, कभी-कभी सूजन भी आ जाती है, लेकिन भारत में पाए जाने वाले बिच्छुओं में से सिर्फ एक (मेसोबुथुस) किस्म के बिच्छू इतने ज़हरीले माने जा सकते हैं कि उनके काटने से व्यक्ति मर जाए। लेकिन डर तो लगता ही है।

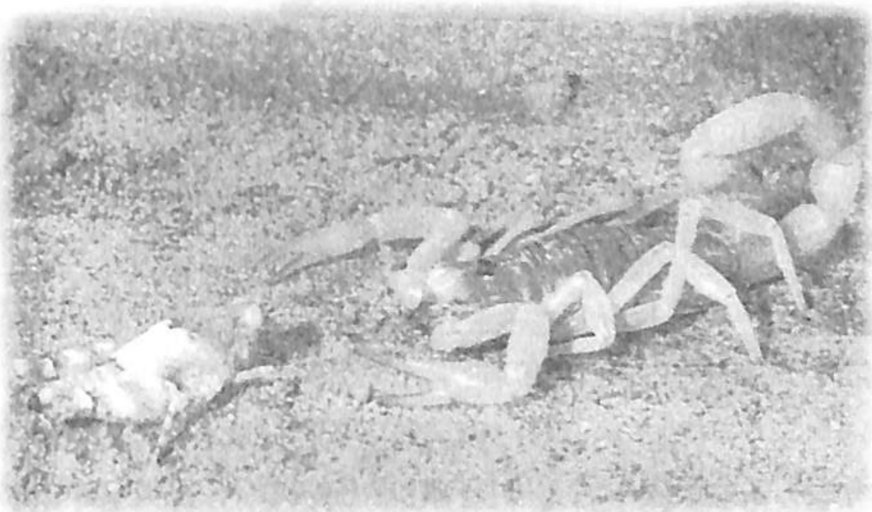
बिच्छू का ज़हर उसके डंक में होता है जो उसके शरीर के सबसे पिछले भाग में होता है। बिच्छू किसी को सताने के लिए डंक नहीं मारता। डंक एक तरह से उसका आत्मरक्षा का हथियार है। बिच्छू डंक तभी मारता है जब वह डर जाता है। बिच्छू के पास यदि डंक नहीं होता तो वह इस धरती पर बचा भी नहीं रह पाता।

इसके अलावा बिच्छू अपने डंक का उपयोग अपने शिकार को सुन्न करने के लिए भी करता है।

बिच्छू के डंक से ज़हर की दो थैलियाँ जुड़ी होती हैं। डंक के माध्यम से यह ज़हर शिकार के शरीर में प्रवेश कर जाता है। डंक का असर पाँच मिनिट में दिखाई देता है और चौबीस घण्टे तक बना रहता है।

बिच्छू का भोजन

बिच्छुओं को जीवित रहने के लिए ज़्यादा भोजन या पानी की ज़रूरत नहीं होती। सात दिन तक वे पानी के भीतर या शून्य



तापमान पर भी जीवित रह सकते हैं। बिच्छू कुछ ही देर में बहुत सारा भोजन कर लेते हैं और फिर महीनों बिना भोजन के रह लेते हैं। कोई-कोई बिच्छू तो साल-साल भर भी बगैर कुछ खाए रह लेते हैं। बिच्छू महाआलसी

बिच्छू के काटने पर क्या करें?

बिच्छू के काटने पर मरीज़ को फौरन अस्पताल ले जाया जाना चाहिए। डॉक्टर मरीज़ को विषरोधी दवा का इंजेक्शन देंगे जिससे विष सारे शरीर में नहीं फैलेगा। जिस जगह डंक लगा हो उसके ऊपर और नीचे कसकर पट्टी बाँध दी जानी चाहिए और संभव हो तो चाकू गरम करके डंक के स्थान पर चीरा भी लगा देना चाहिए।

ध्यान रहे, बिच्छू के ज़हर का, साँप के ज़हर का या किसी भी ज़हर का इलाज मंत्र से संभव नहीं है। इस तरह हम सिर्फ ज़हर उतरने या मरीज़ के मरने का इन्तज़ार कर सकते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि जिस साँप या बिच्छू ने काटा, वह ज़हरीला न हो, लेकिन मौत के डर से ही मरीज़ अधमरा हो जाता है। ऐसा हुआ तो तीन-चार घण्टे बाद वह खुद-ब-खुद सदमे से बाहर आ जाएगा और हम समझेंगे मंत्र ने काम किया।

होते हैं, इसलिए चलने-फिरने में भी उनकी ज़्यादा ऊर्जा खर्च नहीं होती।

बिच्छू के अग्रभाग में दो लम्बे पंजे होते हैं जिनसे वह अपने शिकार को पकड़ता है। बिच्छू को साफ दिखाई नहीं देता है। वह शिकार के पैरों की आहट और इससे उत्पन्न कम्पन को ध्यान लगाकर महसूस करता है और शिकार पर झपट्टा मारकर उसे चौंका देता है। वैज्ञानिक इसे घात लगाकर शिकार करना (एम्बुश हंटिंग) कहते हैं। छोटे-मोटे कीट-पतंगे से लगाकर तिलचट्टे, चूहे और गिरगिट तक को बिच्छू शिकार बनाता है। बिच्छू का हल्का-सा डंक शिकार को बेसुध बनाने के लिए काफी होता है।



खाने से पहले पचाना

दुनिया में बिच्छू ही ऐसा एकमात्र जीव है जो भोजन को खाने से भी पहले पचाना शुरू कर देता है। कैसे? बिच्छू अपने शिकार को खाने से पहले उस पर एक प्रकार का पाचक रस छोड़ता है। इसमें एन्जाइम्स होते हैं। इससे उसका भोजन तरल पदार्थ में बदल जाता है और फिर वह उसे चट कर जाता है। बिच्छू सिर्फ इसी तरह भोजन कर सकता है।

कभी-कभी जब एक जगह ज़्यादा बिच्छू हो जाते हैं तो बिच्छू ही बिच्छुओं को खाना शुरू कर देते हैं। ●

बिच्छुओं से बचने के लिए क्या करें?

आमतौर पर बिच्छू सूखी, ठण्डी और अँधेरी जगहों में रहना पसन्द करते हैं।

बिच्छुओं से बचने के लिए -

1. जूतों को हमेशा झाड़कर पहनें।
2. कपड़ों को हमेशा पहनने से पहले झटक लें।
3. बिस्तर ज़मीन पर न छोड़ें। उसे लपेटकर ऊँची जगह पर रखें।
4. स्नानघर के फर्श और दीवारों को नियमित रूप से झाड़ू से साफ करें।
5. घर के चारों तरफ कीटनाशक का छिड़काव करें।
6. लकड़ी, कंडों के ढेर बिच्छुओं के छिपने की प्रिय जगहें हैं। इनके पास जाते समय सावधान रहें। रात के समय बगैर रोशनी की व्यवस्था किए ऐसे स्थानों पर न जाएँ।
7. तिलचट्टे बिच्छुओं का प्रिय भोजन हैं। घर में तिलचट्टों को न पनपने दें।

पूरे एक हज़ार

मुल्ला नसीरुद्दीन रोज़ सुबह अपने आँगन में प्रार्थना करता था और चिल्लाकर कहता था - "या अल्लाह! मुझे एक हज़ार दीनार दे। हज़ार यानी हज़ार। न एक कम न एक ज़्यादा। तू 999 भी देगा तो मैं उसे हाथ तक नहीं लगाऊँगा। सुन लेना।"

मुल्ला की प्रार्थना उसके पड़ौसी रहीम चाचा रोज़ सुनते थे। उन्होंने सोचा देखें मुल्ला सच कह रहा है या झूठ। एक दिन मुल्ला प्रार्थना कर रहा था कि रहीम चाचा ने एक थैली में 999 दीनार डालकर मुल्ला के आगे फेंक दी और छुपकर देखने लगे कि अब मुल्ला क्या करता है।

मुल्ला ने प्रार्थना के बाद आँखें खोलीं तो सामने थैली पड़ी पाई। इधर-उधर देखा। कोई नहीं। थैली खोलकर सिक्के गिने तो 999 निकले।

"तो आखिर तूने 999 ही दिए।" कहकर मुल्ला ने थैली उठाई और घर में रख दी।

दो दिन हुए, चार दिन हुए, अब मुल्ला न तो पहले की तरह प्रार्थना करता न थैली बाहर निकालता। आखिर रहीम चाचा से रहा नहीं गया। वह मुल्ला के पास गए और बोले- "क्या बात है आजकल प्रार्थना बंद है?"

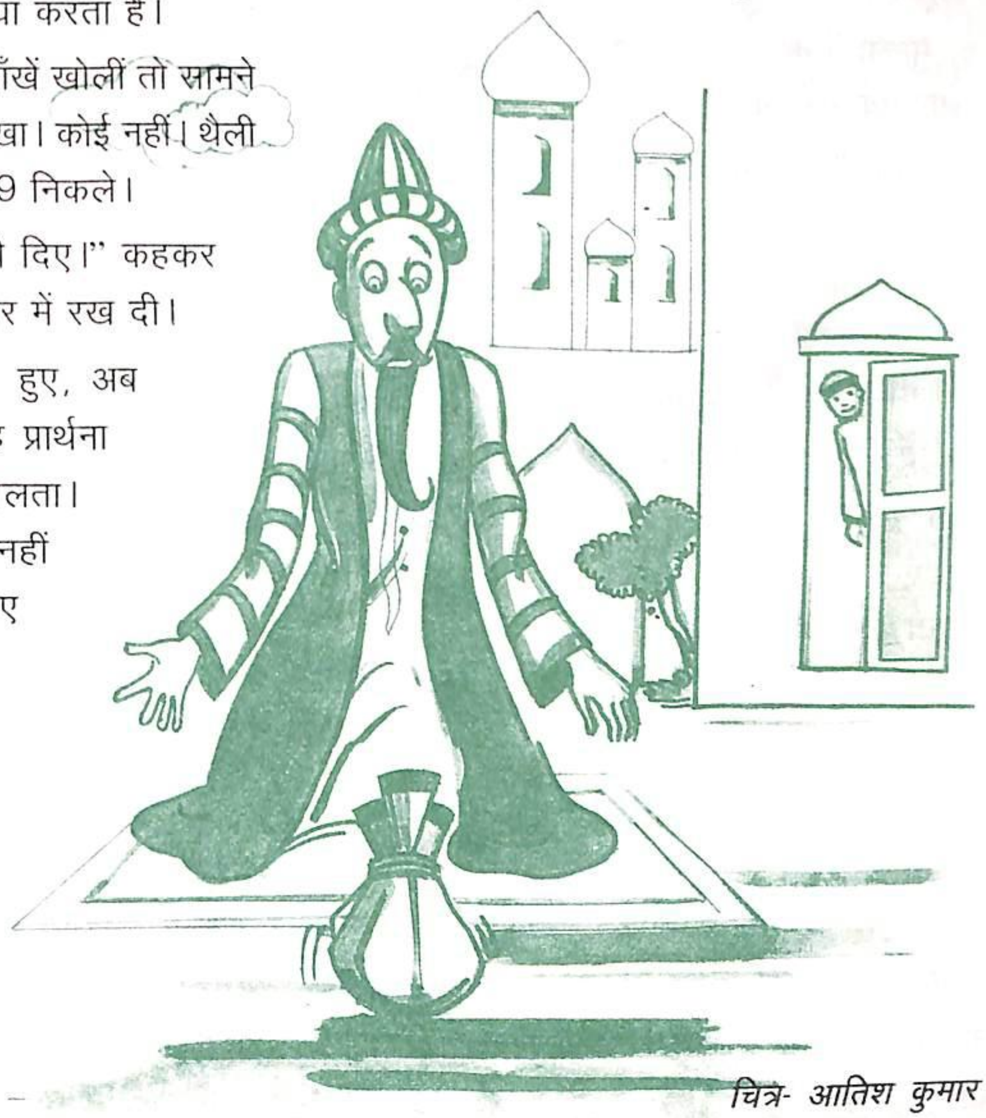
मुल्ला ने कहा- "पता नहीं कौन कम्बख्त मेरे आगे 999 दीनार वाली थैली फेंक गया। अल्लाह तो गणित में इतना कच्चा हो नहीं सकता।"

"वह थैली भी मेरी है और 999 दीनार भी।" रहीम चाचा ने कहा।

"क्या बात करते हो? तुम क्यों ऐसा करोगे भला?"

"मैं देखना चाहता था कि तू सच बोल रहा है या झूठ। तू कहता था कि 999 भी हुए तो तू हाथ नहीं लगाएगा। लेकिन तूने चुपचाप थैली लेकर घर में रख ली। पकड़ा गया न झूठ?"

"लेकिन तुम्हें मेरे और मेरे अल्लाह के बीच पड़ने की ज़रूरत क्या थी?" मुल्ला ने कहा।



चित्र- आतिश कुमार

"ठीक है। भूल हुई। लौटा दे मेरी थैली।" रहीम चाचा ने कहा।

"कौन सी थैली?"

"वही जिसमें 999 दीनार हैं।"

"वह तो अल्लाह ने मुझे दी है। जो गणित में कच्चा नहीं है उससे भी गिनने में भूल हो सकती है।"

रहीम चाचा अपना-सा मुँह लेकर चले गए।

दूसरे दिन फिर आए और बोले- "ऐसा करते हैं, हम शहर काज़ी के पास चलते हैं। उन्हें सारी बात बता देते हैं। फिर वह जो इंसाफ करें। बोल मंज़ूर है?"

मुल्ला ने कहा- "मंज़ूर है। मगर एक समस्या है।"

"क्या?" रहीम चाचा ने पूछा।

"मेरे पास ढंग के कपड़े नहीं हैं। काज़ी के पास क्या ऐसे ही फटेहाल जाऊँगा?"

"चल एक दिन के लिए कपड़े मैं दे दूँगा।"

"एक और समस्या है। मुझसे इतनी दूर पैदल नहीं जाया जाएगा।"

"चल मेरा गधा ले लेना।"

"ठीक है।"

तो दूसरे दिन दोनों पहुँचे शहर काज़ी के पास। रहीम चाचा ने काज़ी को पूरी दास्तान सुनाई और अंत में कहा- थैली मेरी है, मुझे वापस दिलवाई जाए।



"तुम्हारा कोई गवाह है?" काज़ी ने पूछा।

गवाह तो रहीम चाचा का कोई नहीं था।

काज़ी कुछ कहते उससे पहले ही मुल्ला बोला- "हुज़ूर! दूसरे की चीज़ को अपनी बताना इनकी आदत है। अभी थैली को अपना बता रहे हैं, कुछ देर बाद कहेंगे मैंने जो कपड़े पहन रखे हैं, वे भी इनके हैं।"

"हाँ तो हैं ही। मेरे ही तो हैं ये कपड़े।" रहीम चाचा ने कहा।

"देखा? देखा हुज़ूर! अब ये कपड़े भी इनके हो गए। अब कहेंगे वह गधा भी इनका है जिस पर बैठकर मैं आया हूँ।"

"हाँ तो गधा तो मेरा है ही।" रहीम चाचा ने भोलेपन से कहा।

"अब आप ही इंसाफ करें हुज़ूर!" नसीरुद्दीन ने नम्रता से कहा।

काज़ी ने रहीम चाचा को अपनी आदत से बाज़ आने को कहा, अपना वक्त बिगाड़ने के लिए उन्हें डाँटा और थैली मुल्ला को दे दी।

अपना-सा मुँह लेकर रहीम चाचा लौट आए। थैली भी गँवाई, कपड़ों और गधे से भी हाथ धो बैठे।

चार-पाँच रोज़ गुज़र गए।

फिर एक दिन मुल्ला नसीरुद्दीन रहीम चाचा के घर गए और बोले- "ये लो तुम्हारी थैली, ये कपड़े और ये सम्भालो अपना गधा। लेकिन एक बात हमेशा ध्यान में रखना। आइंदा मेरे और अल्लाह के बीच में आने की कोशिश मत करना।"

कलम कैसे लगाएँ?

डॉ. ज्ञानेन्द्र श्रीवास्तव

तुमने देखा होगा कि नर्सरी में एक ही क्यारी में एक ही प्रजाति के पौधों की अनेक कलमें लगी होती हैं। जब ये पौधे के रूप में विकसित हो जाती हैं तो इन्हें बरसात के मौसम में कहीं भी उचित स्थान पर रोंपा जा सकता है। कुछ समय में यह पौधा जड़ पकड़ लेता है और कुछ ही वर्षों में एक अच्छा-खासा पेड़ बन जाता है।

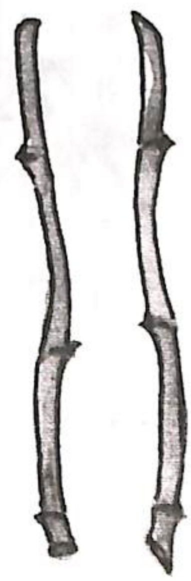
तुम भी चाहो तो अपने बगीचे में या कहीं और अपनी पसंद के पौधे की कलम लगा सकते हो। इसके लिए यह समय सबसे अधिक उपयुक्त है।

कलम किस पौधे की लगती है?

हर पौधे की कलम नहीं लग सकती। जिन पौधों के तनों में लिगनित नाम का रसायन ज़्यादा मात्रा में होता है उनकी कलम नहीं लगती है। लेकिन गुलाब, मोगरा, बोगनबेलिया, कनेर तथा अन्य सजावटी पौधों की कलम इस मौसम में आसानी से लगाई जा सकती है। इसी तरह फल वाले पौधों में आम, अनार, नींबू आदि की कलम भी मज़े से लग जाती है।

कलम कैसे काटते हैं?

कलम स्वस्थ पौधों में से ही काटनी चाहिए। कलम के सिरे को टेढ़ा काटना ज़रूरी नहीं है, लेकिन सफाई से काटना ज़रूरी है। यदि सिरे के रेशे बिखर गये तो जड़ें नहीं फूटेगीं। कलम में पौधे के तने की कम से कम तीन गाँठों का होना ज़रूरी है। तीसरी गाँठ के ज़रा नीचे से ही कलम को काटना चाहिए और रोंपते समय इस गाँठ को या दो गाँठों को ज़मीन में दबा देना चाहिए।



कलम पर गोबर क्यों लगाते हैं?



कलम के ऊपरी सिरे पर यदि फल-फूल या फली लगी हो तो उसे तोड़ देना चाहिए। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि पौधे की सारी ऊर्जा जड़ें बनाने में ही खर्च हो। कई लोग कलम के ऊपरी सिरे पर गोबर लगा देते हैं। कुछ लोग गोबर के स्थान पर मोम भी लगा देते हैं। ऐसा कलम की नमी को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता है।

कलम का आकार

कलम की लम्बाई पौधों की प्रकृति पर निर्भर करती है। फिर भी कलम कम से कम 5 इंच और ज़्यादा से ज़्यादा 30 इंच लम्बी हो सकती है। कलम न बहुत पतली होनी चाहिए और न बहुत मोटी। इसे पौधे के बीच से काटना अच्छा रहता है। आम तौर पर कलम की मोटाई 0.6 सेण्टीमीटर से 5 सेण्टीमीटर तक हो सकती है।



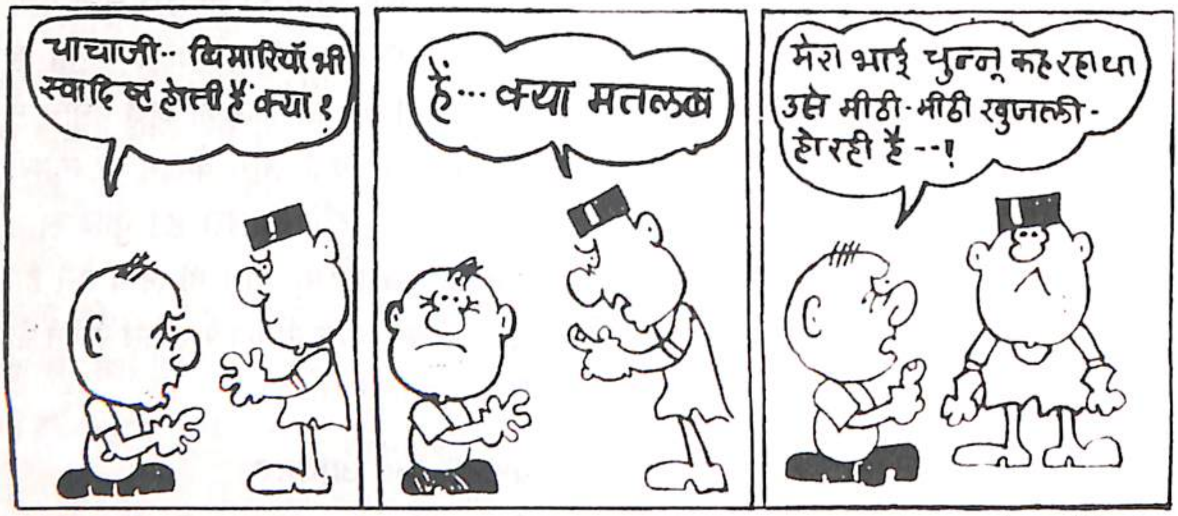
मिट्टी का चुनाव

कलम भुरभुरी मिट्टी में लगाई जाती है। जहाँ कलम लगाई जाए वह जगह हवादार और नमी वाली होनी चाहिए। जिस मिट्टी में कलम लगानी हो उसमें किसी भी तरह की खाद नहीं डालना चाहिए। खाद से जड़ों के निर्माण में बाधा पड़ती है।

कलम लगाने के बाद क्यारी में बहुत ज़्यादा पानी नहीं भरना चाहिए। कलम के नीचे की मिट्टी का भुरभुरा और नम रहना ज़रूरी है।

फिर क्या करें?

कलम लगाने के बाद क्या करें? कुछ नहीं! इन्तज़ार!! एक नई कोंपल फूटने का इन्तज़ार और एक नए खूबसूरत पौधे के स्वागत की तैयारी। तो हो जाए इस बार तुम्हारा अपना एक पौधा!



कार्टून - मणिकांत जोशी

माथापच्ची व चित्रपहेली जुलाई-अगस्त 2005 के हल

माथापच्ची

3. दाहिनी तरफ के अंक 3 व नीचे के अंक 7 का गुणा किया। यह वही संख्या है जो बाईं तरफ के अंक 2 व बीच की संख्या 19 के जोड़ने पर आती है। बाकी दोनों आकृतियों के अंक भी इसी आधार पर भरे गए हैं।

   तीसरी आकृति में 4x 5 = 20

   बीच की संख्या 16 है। अब बाईं तरफ का अंक वही होगा जिसे 16 से जोड़ने पर 20 प्राप्त हो। यानी 4.

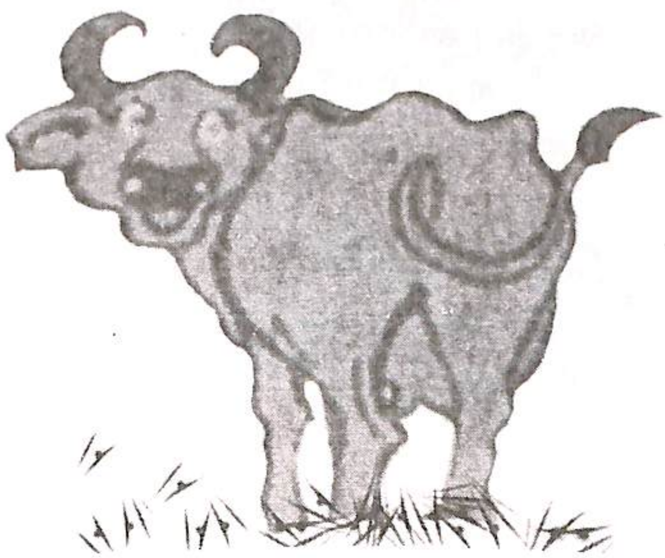
5. 13-14 के जोड़े के पेजों के नम्बर 59-60 होंगे।

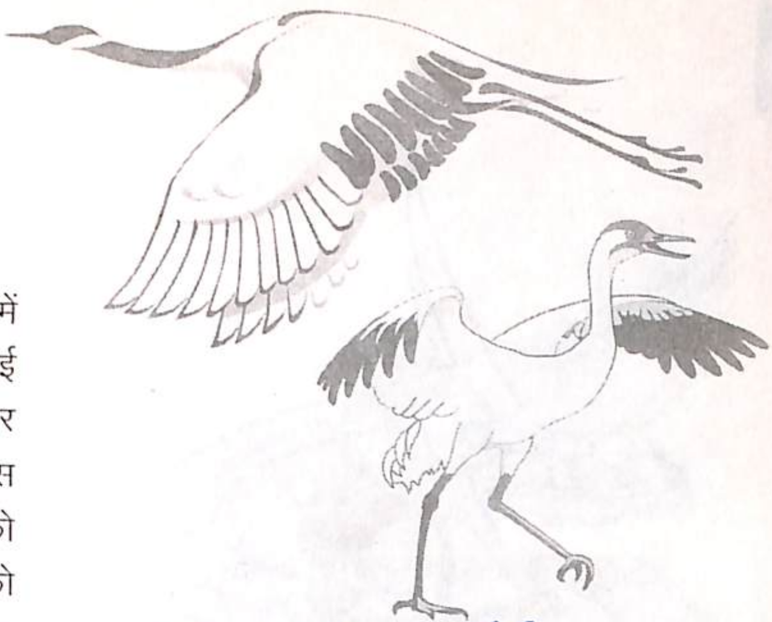
चित्र पहेली

ब		च		ई		ई	श्व	र
क	टा	र		द	स		स	
री		खा		गा		ज	न	ता
	मो		मो	ह	रा			जि
गि	र	गि	ट		के	स	रि	या
ला			र	ह	ट		क्शा	
स	प	ना		ल		वा		ब
	तं		त	वा		न	गा	ड़ा
भाँ	ग	ड़ा		ई		र		ई

दूध का दूध और पानी का पानी

मार्च, 2005 में ललितपुर के धवा गाँव में गिंटे कुर्मी नाम के व्यक्ति की छह भैंसे चोरी हो गई थीं। पुलिस ने उनमें से तीन भैंसों को बरामद कर सागर के कांजी हाउस में पहुँचा दिया था। इस बीच सागर के महेन्द्र दुबे अदालत में इन भैंसों को अपना बता कर अपने घर ले गए। गिंटे कुर्मी को जब यह बात पता चली तो वह सागर गए और उन भैंसों पर अपना दावा पेश कर दिया। जज एम.पी. तिवारी उलझन में पड़ गए कि आखिर भैंसें किसकी हैं? उन्होंने किया यह कि भैंसों को अदालत के अहाते में बुलाकर उनके मालिकों को उन्हें पुकारने को कहा। पहले महेन्द्र दुबे ने भैंसों को आवाज़ दी। वे जस की तस खड़ी रहीं। लेकिन गिंटे कुर्मी ने कल्लो..कल्लो कहकर जैसे ही पुकारा, पहले भैंसों के कान खड़े हुए फिर वे उसके पास आकर खड़ी हो गईं। जज ने तीनों भैंसें उनके असली मालिक यानी गिंटे कुर्मी को सौंप दीं।





राजस्थान में एक और मुहिम

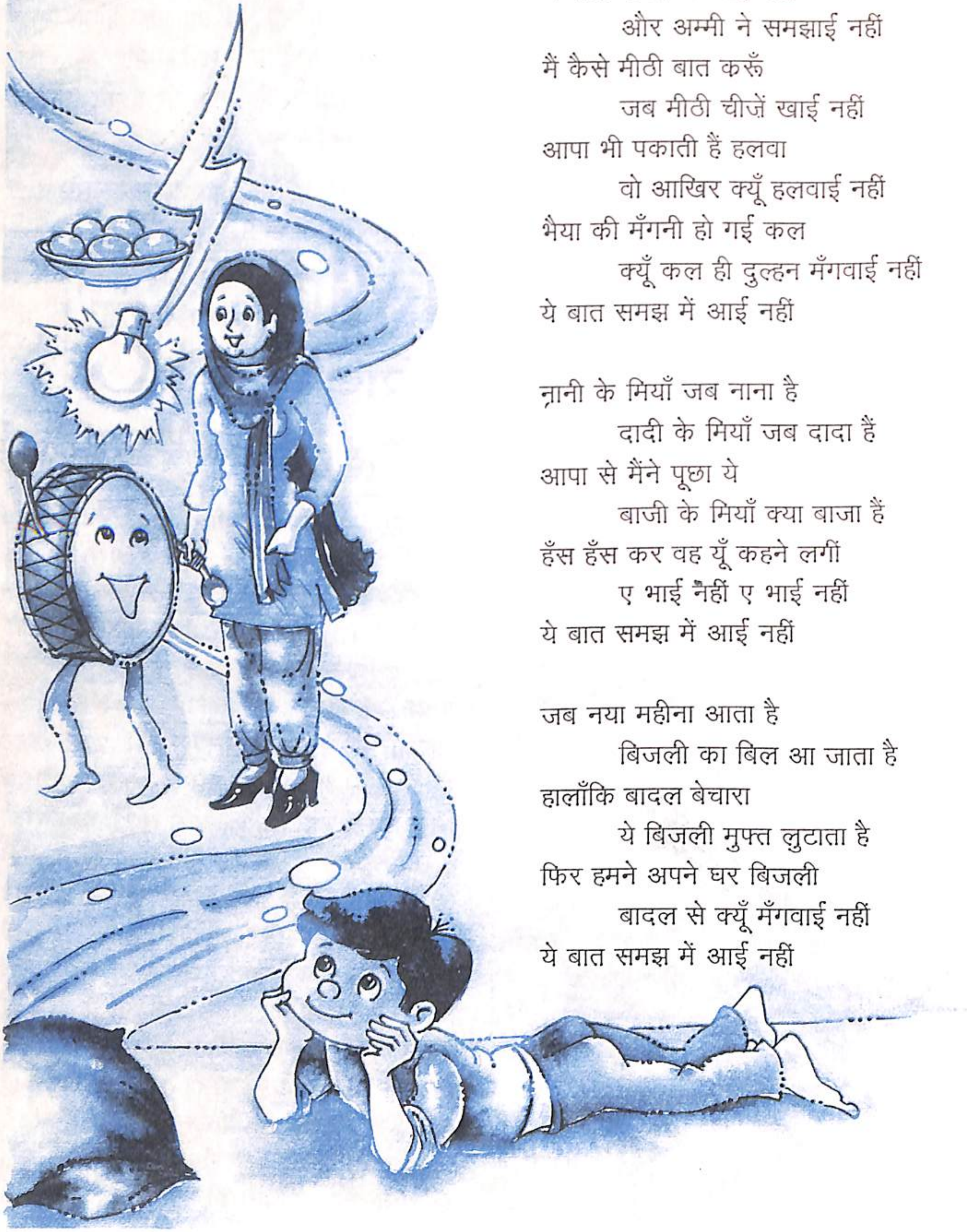
कोटा के पास बहनेवाली चम्बल नदी की एक नहर के किनारे न कोई बच्चा सारस के अण्डे चुराता है, न कोई किसान उन्हें अपने खेतों में आने से रोकता है। दक्षिण पूर्व राजस्थान के इस इलाके में ग्रामीणों और स्वशासी संस्थाओं ने मिलकर वहाँ के सारसों को बचाने की मुहिम चला रखी है। इन सारसों को बचाने के लिए करीब आधा दर्जन गाँवों, 350 छात्रों और 39 शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया। उन्हें नहर के आसपास सारस के घोंसलों वाली लगभग 20 जगहें मिलीं। गाँववालों ने आपस में मिलकर ग्रामीण सारस संरक्षण समूह बनाए। इन लोगों ने सारसों को उन्हें मारनेवालों से बचाया। जानकार ग्रामीणों ने अण्डों को सेने में मदद की। चूज़ों को शुरुआती दिनों में मरने से बचाने के उपाय किए। कोटा के मौसम में सारस साल में दो बार अण्डे देती है। गीले मौसम में जुलाई से अक्टूबर तक और सूखे मौसम में फरवरी से मई तक। पिछले बरस गीले मौसम में सारस के 22 घोंसलों की पहचान की गई थी जबकि सूखे में

ये बात समझ

ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं
मैं कैसे मीठी बात करूँ
जब मीठी चीज़ें खाई नहीं
आपा भी पकाती हैं हलवा
वो आखिर क्यूँ हलवाई नहीं
भैया की मँगनी हो गई कल
क्यूँ कल ही दुल्हन मँगवाई नहीं
ये बात समझ में आई नहीं

नानी के मियाँ जब नाना है
दादी के मियाँ जब दादा हैं
आपा से मैंने पूछा ये
बाजी के मियाँ क्या बाजा हैं
हँस हँस कर वह यूँ कहने लगीं
ए भाई नहीं ए भाई नहीं
ये बात समझ में आई नहीं

जब नया महीना आता है
बिजली का बिल आ जाता है
हालाँकि बादल बेचारा
ये बिजली मुफ्त लुटाता है
फिर हमने अपने घर बिजली
बादल से क्यूँ मँगवाई नहीं
ये बात समझ में आई नहीं



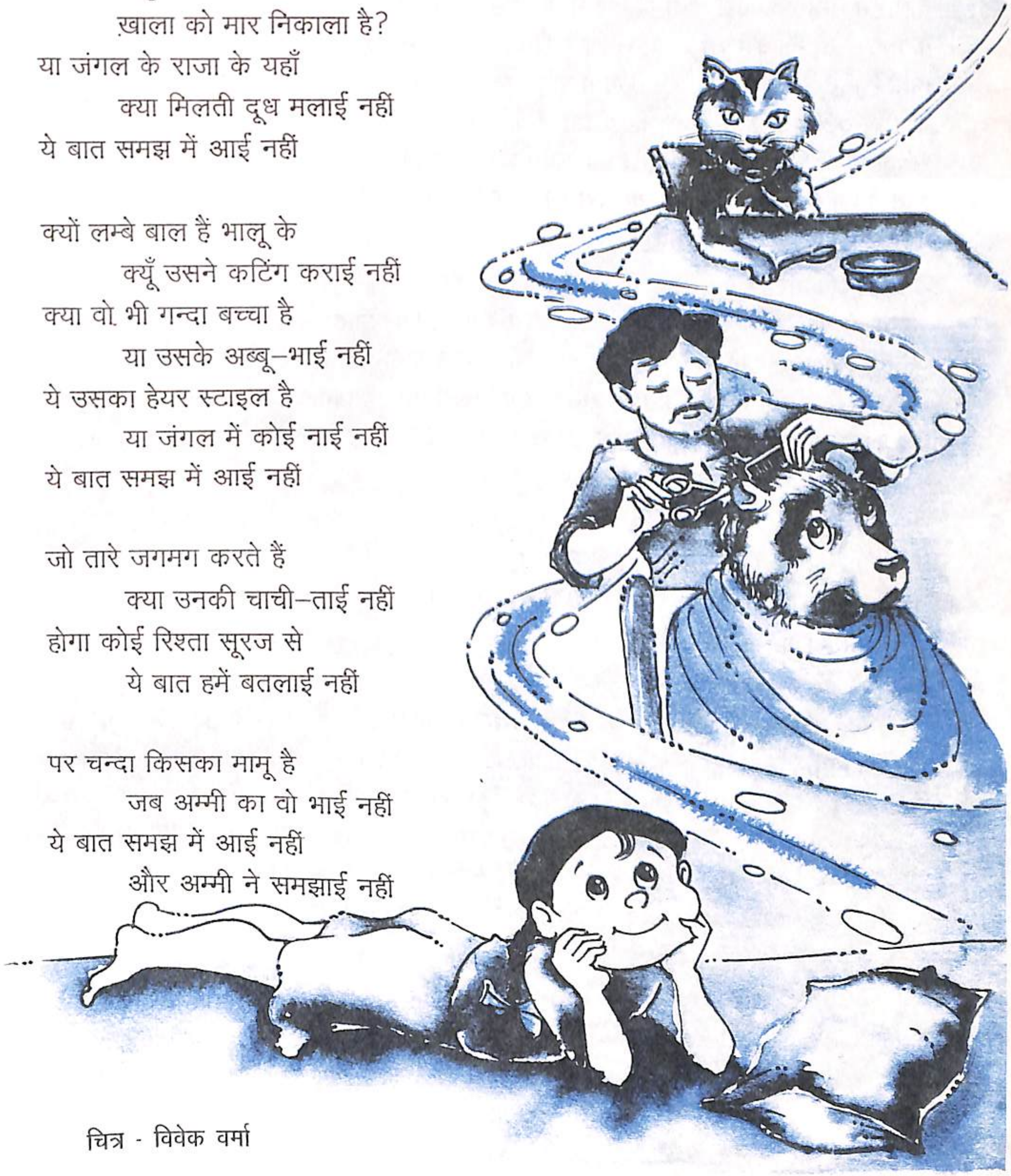
में आई नहीं...

गर बिल्ली शेर की ख़ाला है
फिर हमने उसे क्यूँ पाला है
क्या शेर बहुत नालायक है
ख़ाला को मार निकाला है?
या जंगल के राजा के यहाँ
क्या मिलती दूध मलाई नहीं
ये बात समझ में आई नहीं

क्यों लम्बे बाल हैं भालू के
क्यूँ उसने कटिंग कराई नहीं
क्या वो भी गन्दा बच्चा है
या उसके अब्बू–भाई नहीं
ये उसका हेयर स्टाइल है
या जंगल में कोई नाई नहीं
ये बात समझ में आई नहीं

जो तारे जगमग करते हैं
क्या उनकी चाची–ताई नहीं
होगा कोई रिश्ता सूरज से
ये बात हमें बतलाई नहीं

पर चन्दा किसका मामू है
जब अम्मी का वो भाई नहीं
ये बात समझ में आई नहीं
और अम्मी ने समझाई नहीं



चित्र - विवेक वर्मा

शिकारी पौधे



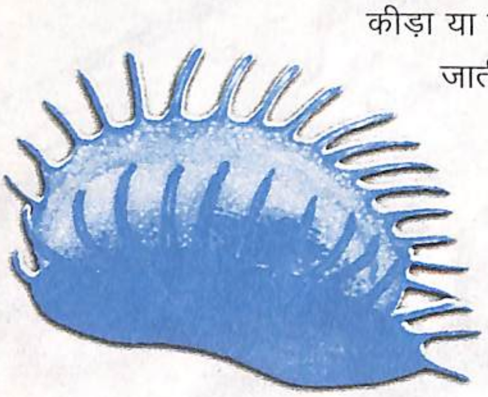
क्या तुमने कभी ऐसे पेड़-पौधों के बारे में सुना है जो कीड़े-मकोड़े खा जाते हैं? एक मशहूर किताब में एक ऐसे पेड़ का किस्सा है जो इंसान को खा जाता है। तुम्हें क्या लगता है क्या ऐसे पौधे होते होंगे?

यहाँ हम तुम्हें कुछ ऐसे पौधों के बारे में बता रहे हैं जो कीड़ों को अपनी पत्तियों में कैद कर लेते हैं। वैसे रंग, रूप, लंबाई, हुलिया आदि के मामले में इनमें बहुत फर्क होता हैं। हाँ, पर एक चीज़ इन सभी में पाई जाती है। ये सभी पौधे कीड़ों को अपनी ओर खींचते हैं और उन्हें अपनी पत्तियों में कैद कर लेते हैं। कुछ पौधे अपने रंग से कीड़ों को ललचाते हैं तो कुछ की सुगंध इतनी लुभाती है कि कीड़े खिंचे चले आते हैं। कुछ पौधे एक प्रकार का रस छोड़ते हैं। कीड़े जैसे ही इस रस पर बैठते हैं पत्तियाँ उन्हें कैद कर लेती हैं।

अब सवाल यह उठता है कि ये पौधे इन कीड़ों का क्या करते होंगे? पेड़-पौधे अपना भोजन प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा बनाते हैं। पर पौधों को पनपने के लिए कुछ खनिज-लवणों की भी ज़रूरत होती है। पौधे ये तत्व ज़मीन से लेते हैं। कुछ पौधे बंजर या कम उपजाऊ मिट्टी में उगते हैं। उन्हें ज़मीन से ये जरूरी तत्व नहीं मिल पाते। इसी ज़रूरत के चलते उनमें एक खास व्यवस्था बन गई है। पौधे इन तत्वों की पूर्ति के लिए कीड़े इत्यादि चीज़ों को फाँसते हैं। इन कीड़ों को मारकर वे इनसे ज़रूरी लवण सोख लेते हैं।

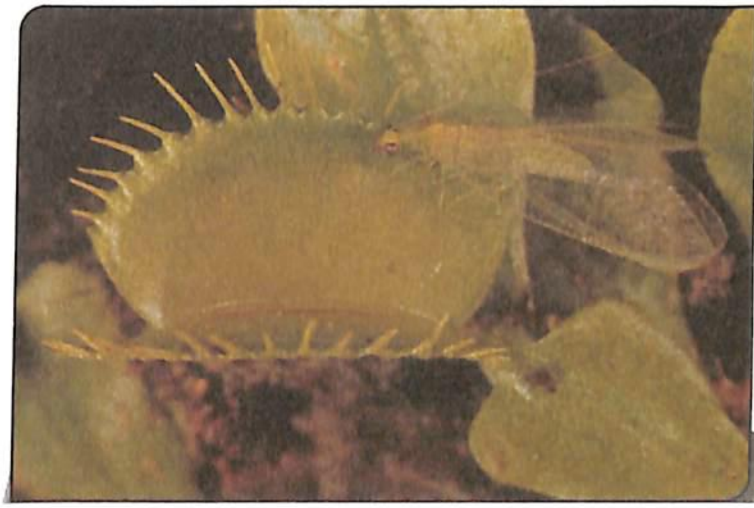
ऐसा ही एक पौधा है **सनड्यू**। इसकी पत्तियों की कोरों में बालनुमा रेशे होते हैं। इन रेशों में चिपचिपे से द्रव की बूँदें लटकी रहती हैं। धूप में ये बूँदें चमचमाने लगती हैं। कीड़े इन बूँदों की ओर खिंचे चले आते हैं। जैसे ही वे इन बूँदों पर बैठते हैं पत्तियों की किनारों के रेशे उन्हें घेर लेते हैं। और कीड़े उनमें फँस जाते हैं। अब ये रेशे कीड़े को फूल के अंदर धँसाते जाते हैं। तभी पत्तियों से एक द्रव रिसता है। यह द्रव कीड़े को पचाने का काम करता है।

इसी तरह का एक और पौधा है **वीनसेज फ्लाईट्रेप**। इसमें भी कीड़ों को फाँसने की कमाल की व्यवस्था होती है। इसकी पत्तियों पर भी काँटेनुमा बाल होते हैं। पत्ती की किनार पर एक पंजेनुमा आकृति होती है। पत्ती जब चाहे तब अपने को आधे से, यानी हमारी मुट्ठी की तरह मोड़ सकती है। जैसे ही कोई कीड़ा या मक्खी इसकी पत्तियों पर बैठता है ये पंजेनुमा आकृतियाँ बंद हो जाती हैं। बस शिकार अंदर। और फिर पौधा इस शिकार को पचाकर ज़रूरी तत्व प्राप्त करता है।



पिचर प्लाण्ट यानी घड़ेनुमा पौधा! इस पौधे की पत्तियाँ जग या घड़े के आकार की होती हैं। जैसे ही कोई कीड़ा इस पर बैठता है इस पर लगे चिकने द्रव से अंदर फिसल जाता है। इस घड़े के तल में चिपकने वाला एक द्रव रहता है जिसमें कीड़ा या शिकार चिपक कर रह जाता है। और पौधा इसे पचा लेता है।

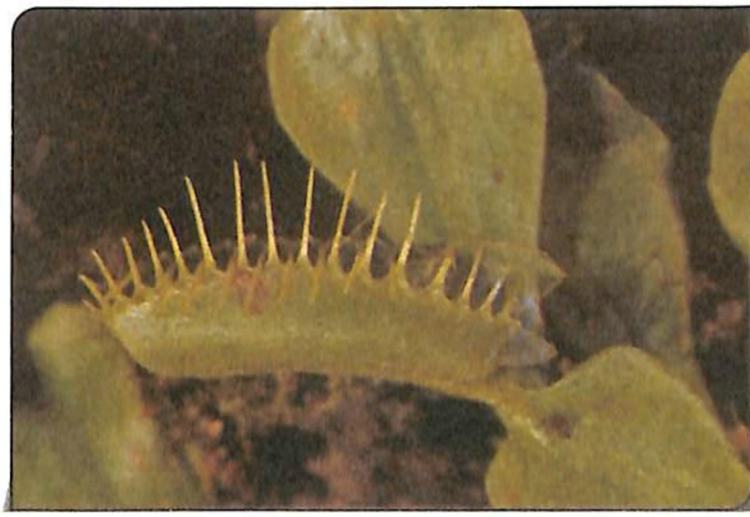












जाल फैलाए शिकारी पौधे

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद राय